प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी
संपादक
डा0 अशोक द्विवेदी
संपादन सहयोगी
विष्णुदेव, सान्त्वना, हीरा एवं सुशील
डिजाइन आ ग्राफिक्स
वर्तिका
सज्जा
आस्था
कंपोजिंग
कम्प्यूटर्स प्वाइण्ट, भृगु आश्रम-बलिया
एवं शैलेश कुमार, नई दिल्ली
विशेष प्रतिनिधि
गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' (गोरखपुर), सुशील कुमार तिवारी (नई दिल्ली), विजय राज श्रीवास्तव (लखनऊ), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), विष्णुदेव तिवारी (बक्सर, आरा), विनय बिहारी सिंह (कोलकाता), गंगा प्रसाद 'अरूण' (जमशेदपुर), डॉ० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), डा० कमलेश राय (मऊ, आजमगढ़), डा० प्रकाश उदय, विनोद द्विवेदी , डा० वशिष्ठ अनूप (वाराणसी), आकांक्षा (मुम्बई), मिथिलेश गहमरी, कुबेर नाथ पाण्डेय (गाजीपुर), हीरालाल 'हीरा'(बलिया), आनंद संधिदूत, विजय दुबे (मिर्जापुर), प्रभात कुमार तिवारी (तूरा, मेघालय), रामानन्द गुप्त 'रमन' (सलेमपुर, देवरिया)
इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा० ओम प्रकाश सिंह
संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक
संपादन-कार्यालय :-
टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001
फोन- 05498-221510,
मो०- 08004375093
e-mail :- ashok.dvivedi@rediffmail.com

एह अंक पर सहयोग- 25/-
सालाना सहयोग राशि 130/- (डाक व्यय सहित)

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ : ओसे पत्रिका परिवार क सहमति जरूरी नइखे)

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)
www.bhojpuripaati.com

vad 61&62 tqykbZ&flrEcj 2011

एह अंक में........

हमार पन्ना
- u;k ykdra= d lius@ i0 4&6

रपट/रिपोर्ताज
- ykdra= es ykdHkkouk d cfelky thr@ixr f}osnh

रम्य रचना/व्यंग i0 8&12
- jmjk vbyh@jktxIr@ 30&31

थाती
- Lo0 txnh'k vk>k ^lqUnj^@7

कविता/गीत/गज़ल
- jkef t;kou nkl ckoyk@16 ● ghjkyky ^ghjk^@18
- vkuUn lf/knr@19 ● f'koi tuyky ^fo|kFkh^@33
- gtkjhyky xIr@34 ● tuknu i0 f}osnh@35
- Hkkxor ikM;@45

कहानी
- dk;j@fo".kno frokjh@13&16
- vkf[kjh cjk d l?kkrh@'kHkqukFk mik/;k;@27&29

लोकसंस्कृति
- 'k[kck tj cyk; Hkkx@vkun lf/knr@17&18

लोकसंपदा
- ykd d dFkk] ykddFkk@f'kyhe|[k@20&26

लघुकथा
- lkokt fud d lekurk@_Pkk@32

नाटक
- rkjugkj@lj'k dkVd@36&43

कसौटी
- eku"k eY;u d [kMk djd dkf'k'k% ^ixyk ixyh^@ lkUROuk@44&45
- viuk b;rk thou lR; d [kkt% ^nfu;k nmj jgy ck^@ l'khy dekj frokjh@46&
- bfrgkl d u;k iUuk% ^ifgyk uk;d^@fo".kno@46&47
- ixfr'khy dfork% ^dk , cdyk^@jkekun xIr@48
- bfrgkl l tMy miU;kl%^cpkjk lekV^@ghjkyky@48&49

राउर पन्ना
- ikBd ykx d ifrfd;k@50

(एक) नया 'लोकतंत्र' के सपना

हमनी का 'लोकतंत्र' क चरचा आ बड़ाई जहान में बा। अमरीका, रूस, ब्रिटेन जइसन बड़का-बड़का देश कहेलन स; बाकि देश का नागरिक का रुप में जवन पहिचान (रिकग्निशन) सम्मान, न्याय, सुरक्षा आ समानता के हक आम आदमी के मिले के चाहीं, ऊ हमन के आजु ले नसीब ना भइल। हमनी किहाँ लोकसेवक नेतन के बात-बतकही आ भासन में के जरूर सुने के मिलेला कि ऊ सबके न्याय, सम्मान, सुरक्षा आ स्वतंत्रता, समानता दियवाई। रोटी-रोजी, बिजली, पानी, मकान, शिक्षा आ चिकित्सा के माकूल प्रबंध खातिर लड़त रही; बाकिर हमहने क चुनल प्रतिनिधि - सांसद, आ विधायक बनते रोआँ-रंग बदल लेत बाड़न स। ओघरी लोगन का जरिये, लोगन खातिर, लोगन के शासन वाला लोकतंत्र क परिभाषा अधूरा आ विरोधाभासी लागे लागेला, जब लोगन का अहिंसक विरोधो के गला घोंटल जाला। लोकतंत्र आ ओकरा खातिर होखे वाली राजनीति क बस ओतने देर ले तालमेल बा, जबले सत्ता नइखे भेंटात। सत्ता हथियावे का खेल में 'लोक' मतदाता रूपी एगो मोहरा बा आ ओकर इस्तेमाल चुनाव का समय से चुनाव बाद सरकार बनला पर राजनेता करत बाड़न। सत्ता में बइठल राजनेता आ ओकर सहायक काम त अपना मने-मोताबिक करत बाड़न। जनता से चिक्कन बात आ आश्वासन, भीतर से कुर्सी क खेल आ स्वारथ-सिद्धि।

ई हमनी के लोकतंत्र आ ओकरा राजनीति के अजीबो-गरीब गँठजोड़ बा। सत्ता का एह राजनीति में असली खेलाड़ी केहू अउर बा, आ दोसरा दोसरा लोगन पर अँगुरी उठे लागत बा। पद आ अधिकार क सबसे बेसी फायदा उठावे वाला सुरक्षित आ एकोरा बइठल मुसुकी काटत बा आ अनेरिहा आ कमजोर लोग फँसल-फाँसल जात बा। अइसनका माहिर आ शातिर दिमाग वाला लोगन क जमात आ गठबंधन सत्ता का अन्दरुनी हिस्सा में धमाचौकड़ी मचवले बा। पक्ष भा विपक्ष में बइठल पार्टी आ ओकरा नेतन का बीच अपना अपना सिद्धांत, विचार आ दर्शन क अतिवादी व्याख्या बा। जातिवाद आ संप्रदायिकता का अतिवादी व्याख्या बा। जातिवाद आ संप्रदायिकता का अतिवादी ललकार से भागब त धर्मनिरपेक्षता क अतिवादी रूप भेंटाई। कांग्रेस-मुस्लिम लीग गठबंधन क विरोध करे वाला, अचानक ओकरे संगे मिलि जइहन स आ हरियर, भगवा आ नीला रंग क तूं - तूं : मैं-मैं में दोसर-दोसर अतिवाद क जनम हो जाई। हर अतिवादी व्याख्या क लब्बो-लुआब बा 'सत्ता'।

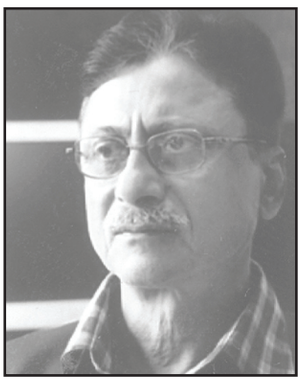

हमन किहाँ लोकतंत्र का नाँव पर अबले वंशवाद आ व्यक्तिवाद फरत-फुलात आइल बा। कुछ लोग

कहेला कि ई कांग्रेस में, नेहरु-गाँधी परिवार से उपजल लोकलुभावन नेतृत्व क कमाल आ आकर्षण रहे। बाकिर आगा किसिम-किसिम के क्षेत्रीय, राष्ट्रीय पार्टी जनमली सन। उन्हनी क अगुवाई व्यक्तिवादिये भा व्यक्तिकेंद्रित रहे। करुनानिधि, रामचंद्रन, एन. टी. रामाराव, जयललिता, लालू जी, मुलायम जी, शरदपवार, बहिन मायावती जी, ममता जी जइसन लोगन क पार्टी में प्रभुत्व आ नियंत्रण इन्दिरा जी जइसन व्यक्तिवादिये रहे। क्षेत्रीय क्षत्रप - आ कद्दावर नेतन के लोकप्रियता आ ताकत का आगा राष्ट्रीय कहाए वाली पार्टी बार-बार झुकली सन। कांग्रेस का अलावा दोसरो केहू इनहने का बूता पर सरकार बनावल। सरकार केहू क बनल बाकि नेता-मंत्री-अफसरशाही क

गँठजोड़ स्वार्थमूलक राजनीति प हमेशा दबदबा बनवलस। एही कारन आजु आजादी का सातवाँ दशक ले हमनी का लोकतंत्र में 'लोक' लगातार उपेक्षित आ असहाय रहल।

राजनीति के जवन सोच-विचार आ तौर-तरीका हमनी किहाँ विकसित भइल, ऊ वैचारिक प्रदूषण, संकीर्णता, स्वारथ आ भ्रष्टाचार में फँसत रहल। सत्ता पावे आ सत्ता के अगिला वारिस बने-बनावे वाली राजनीति, लोकनीति आ लोकशाही के साफ सुथरा रूप कइसे खड़ा होखे दी ? लोकशाही त तब होइत, जब लोकभावना क खेयाल कइल जाइत, लोकमत क चिन्ता हो. इत, 'लोकहित' क संकल्प होइत, 'लोक' से डर होइत।

लोकतंत्र का नाँव प सरकार आ सरकारी तंत्र के ना त 'लोक-अस्मिता' के लिहाज बा ना लोकमत के चिन्ता। ई तंत्र त अपना मंत्री, अफसरन का सुख सुविधा आ सुरक्षा का नाँव पर लोगन के दबावे, दरकचे आ हुरपेटे में तनिको देरी ना करे। एगो बड़ मंत्री भा अफसर का आगमन पर लोगन के रास्ता तक रोक दिहल जाला। विकास का नाँव पर, लोगन क जियका-जमीन तक छीन लेबे वाली ई सरकारी मशीनरी अपने नियम-कानून लाँघ के अपना सरपरस्त आ हीत-मीतन के फायदा पहुँचावे का हरचंद कोशिश में लागि के कवन लोकहितकारी काम के अंजाम देले ? भ्रष्ट नेता, अफसर आ प्रभावशाली लोगन क गँठजोड़ अपना हित में नियम-कानून क मनमाना उपयोग करे लागेला। गरीब आ कमजोरन के भलाई आ सहायता वाली योजना काहे फेल हो जाली स ?

लोकतंत्र के मतलब आ महत्व सभके-समझावे वाला नायक महात्मा गाँधी, अम्बेदकर, जयप्रकाश नारायण, लोहिया जइसन दृढ़ आ विचारशील लोगन क अकाल पड़ि गइल अब एही लोग का नाँव पर राजनीति करे वाला नेता लोग 'लोकतंत्र' क दशा आ दिशा बिगाड़ रहल बा। अब त सहियो बात खातिर, आवाज उठावे वालन के निहँसावल-दबावल जाता। भखड़ल-भ्रष्ट व्यवस्था में बदलाव खातिर बेचैन लोग- के एकजुटता आ संघर्ष का हर कोसिस के नाकामयाब करे खातिर, अलोकतांत्रिक - अमानवीय चाल चलल जाता। अन्ना हजारे होखसु भा रामदेव नियर साधू- अनशन आ विरोध के अनुमति नइखे। जमाखोरन क कालाधन होखे भा घोटालन से कमाइल भ्रष्ट धन, एप्पर केहू बोली त तुरते राजनीति शुरू। लोकपाल विधेयक कइसे बनी, एकरा से 'लोक' आ लोक-मंगल क इच्छा राखे वाला नागरिकन से का मतलब ? सरकार में बइठल पार्टी असहिष्णु आ आक्रामक रुख अपनावत 'पुलिस तंत्र' के सख्ती आ बर्बर तौर-तरीका अपना लेत बिया। एकरा बारे में निर्णय सरकार करी। सरकारी लोगन क आपन तर्क बा कि जनता जब आपन प्रतिनिधि चुन के भेजले बिया त विधेयक बनावे ना बनावे का बारे में सोचे आ निर्णय लेबे के अधिकार सांसदन के बा। कहे के मतलब कि एक बेर गलत-सही जवन चुनाव जनता क दिहलस ओकर कुफल जनता भोगो - बीच में नीतिगत मसला पर बोले के, विरोध करे के ओकर स्वतंत्रताजनक अधिकार खतम। इहाँ तक कि जनता के विरोध के अहिंसक रुप अनशन-भूख हड़तालो पर रोक बा।

हमनी के 'लोकतंत्र' क सबसे दुखद आ असहाय बनावे वाली विद्रूप स्थिति इहे बा कि भ्रष्टाचार, घोटाला, कालाधन, महँगाई आ लोकपाल जइसन जरूरी मसला पर - संसद में सार्थक बहस का बजाय, सरकार आ विपक्ष में अन्दरूनी 'डील' हो जाता। बहस 'फिक्स' भइला के आरोप लागऽता। एह स्थिति में 'लोकतंत्र' के पहरेदारन आ नीति-नियामकन से भरोसा काहे ना उठी ? आवाज उठा-उठा के थाकल, पिटाइल-खदेड़ल लोग निराश काहे ना होई ? महँगाई, आतंक आ हादसा पर सरकार बड़ा आराम से टिप्पणी करे खातिर सुतंत्र बिया कि पूरा दुनिया में इहे हाल बा। माने कि एक कूल्हि के आपन दैबी नियति मान के सब सब्बुर क लेव। एतहत बड़ देश, एतना बड़हन आबादी में भला सबके, कइसे 'सुरक्षा' दे दिहल जाव ? कइसे महँगी के सहती में बदल दिहल जाव ? सरकार का लगे 'कवनो जादू के छड़ी' नइखे।

लोग कहेला कि हमनी किहाँ रामजी के 'रामराज' आ द्वारकाधीश के द्वारिका में आम आदमी के बड़ा खेयाल रहे। केहू भूखा, दुखी, दरिद्र आ असुरक्षित ना रहे – भलहीं ओह घरी लोकतंत्र ना रहे; बाकि 'लोक–विरोध' आ 'लोकमत' क खेयाल त रहे। 'लोकनीति' के कीमत त समझल जाव। ओघरी क समय–परिस्थिति आ 'आदर्श' जवन रहे लेकिन जवन बढ़िया, मुनासिब आ महत्त्वपूर्ण रहे ओके अपनवला में हर्जे का बा। पूंजीवाद, समाजवाद, वामपंथ, दक्षिणपंथ जब हमनी किहाँ जीयत–जागत आ पनपत बा त एह कूल्हिन का अतिवादी सोच, पूर्वाग्रह आ ग्रंथि से अलगा एगो नया वैचारिक धरातल पर 'लोकमंगल' आ 'लोकहित' खातिर नया लोकतंत्र क सपना आ परिकल्पना काहे ना कइल जाव ? पहिले का 'राजसत्ता' में 'प्रजा' के चिंता, भलाई आ सेवा, कवनो राजा कतनो कइले होखे बाकि समाजिक ढाँचा में बइ–छोट, कमजोर–बलवान, ऊँच–नीच त रहबे कइल। छल–प्रपंच, विश्वासघात आ हत्या का बावजूद, अच्छा या कल्याणकारी राज–समाज बनावे खातिर कोशिश आ संघर्ष ओहू समय बन ना भइल। सामन्ती सोच – संकीर्णता का दबाव में, प्रगतिगामी; नया आ आधुनिक सोच के पैदा होखे से केहू ना रोक सकल, त अब कइसे रोकी ? अब त बहुत कुछ बदल–चलल बा। हमनी क लोकतंत्र बासठ बरिस पार क चुकल बा।

कहे के मतलब ई कि अब, 'लोकतंत्र' के बासठ बरिस देखला, समझला आ अनुभव कइला का बाद, इहे बुझाता कि हमहन के फेरु से नया 'लोकतंत्र' रचे क समय आ गइल बा। अइसन लोकतंत्र जवना में छोट–बड़, जाति–धरम, आपन–पराया के भेदभाव एकदम खतम क के, मानव–केन्द्रित सामाजिकता के रोपल–सींचल जाव – जवना के मूल आधार समता आ 'लोकहित' होखे – जवन आचार – व्यवहार, चिन्तन आ सोच में साँच, शुद्ध, खरा आ ईमानदार होखे; जवन कथनी–करनी में विपरीत ना होखे, जवना में राजनीति – 'लोकनीति' के अनुसरण करे – जवना में 'लोकमत' आ 'लोक निर्णय' के आदर कइल जाव। शिक्षित, प्रगतिशील, आधुनिक सोच–दीठि वाला ईमानदार लोग आ 'लोक' के दिसाईं प्रतिबद्ध आ समर्पित लोग एकर अगुवाई करे। 'तंत्र' क जवन ढाँचा खड़ा होखे, ओमे शामिल नियंता आ नियंत्रक लोग 'लोक' का प्रति जबाबदेह होखे – ओह लोगन के मूल उद्देश्य खाली 'लोक–हृदय' में स्थान बनावल आ जनता क विश्वास जीतल ना होखे – ओहू से आगा बढ़ि के लोकमंगल आ लोक–पालन होखे। लोगन का हर वर्ग के एक साथ मिलाइ के चले–चलावे वाला – होखे।

अइसन 'लोकतंत्र' रचल आसान नइखे – बहुते कठिन, उबाऊ आ संघर्ष भरल काम बा, बाकिर एकरा अलावा सुधार क दूसर रास्ता नइखे – पुरान देवाल गिरा के नया खड़ा कइला में बहुत परेशानी आ परिश्रम लागेला। पुरान तौर–तरीका, पुरान मिस्त्री–कारीगर के जगहा नया निष्ठावान कारीगर आ नया सोच के शिल्प रचे वाला, नया मिस्त्री मिल जइहें त नया मजबूत घर बन के खड़ा हो जाई। अइसहीं नया लोकतंत्र के रचे वाला लोग जब संकल्प लेके, बदलाव के अलख जगाई त करोड़ों लोग ओकरा साथे खड़ा हो जाई। भ्रष्टाचार, सरकारी मनमानी, मौलिक अधिकारन के हनन आ भेदभाव से आजिज उबियाइल लोगन के भीतर बदलाव आ सोगहग आजादी पावे क लालसा ओके सड़क पर आवे खातिर मजबूर कर रहल बा। काल्हु चौंसठवां साल का पन्द्रह अगस्त का दिने बदलाव के नया सूरुज जरूर उगी आ ओकरा नया किरिनिन के उर्जा, नया लोकतंत्र खातिर परिवर्तन चाहे वालन का भीतर समा जाई। वन्दे मातरम् ! जय जन गण !! जय भारत माता !! सपना सिद्ध करीं।

अशोक द्विवेदी

थाती

स्व० जगदीश ओझा 'सुन्दर' के दू गो गीत

सुराज (एक)

सगरी बिपतिया के गाड़ भइलि जिनिगी।
नदी भइल नैना पहाड़ भइलि जिनिगी।
आग जरे मनवा में
धधकेले सँसिया
असरा में धुआं उठे
प्रान चढ़ल फँसिया
देहि के जरौना बा भाड़ भइलि जिनिगी।
नदी भइल नैना पहाड़ भइलि जिनिगी।
केहू माँगे घूस, केहू–
माँगे नजराना
केहू माँगे सूदि मूरि
केहू मेहनताना–
कुकुर भइले जुलुमी–जन, हाड़ भइलि जिनिगी।
नदी भइल नैना पहाड़ भइलि जिनिगी।

सुराज (दू)

जनमे के सूतल, जिनिगिया से रूठल
टूटलि ना निनिया तोहार
बतावऽ भइया, जगब ऽ त कहिया ले जगबऽ ?

खेतवा जगावे, खेतनिया जगावे
अमवा–महुइया बगनिया जगावे
फटही लुगरिया में धनिया जगावे
सुसुकेले अँचरा पसार,
बतावऽ भइया, जगब ऽ त कहिया ले जगबऽ ?

काया डहाइल, महँगिया क मारल
साहस ओराइल बिपतिया से हारल
टूटलि कमरिया हो फाटल करेजवा–
जरि गइले घरवा–दुआर,
बतावऽ भइया, जगब ऽ त कहिया ले जगबऽ ?

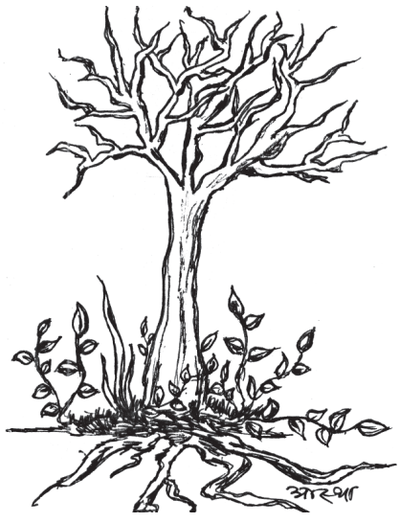

दस गो रूपइया क सुदिया सैकड़ा
कबहूँ बेयजवा के छूटल न झगरा
रोजे तगादा में आवे पियादा–
गरिया सुनावे हजार,
बतावऽ भइया, जगब ऽ त कहिया ले जगबऽ ?

भइया, बिलइलऽ तूँ अपने करनवा
तहरे मे देसवा के बाटे परनवा
तहरे से जगमग बा कोठवा–अटरिया
काहे मड़इया अन्हार ?
बतावऽ भइया, जगब ऽ त कहिया ले जगबऽ ?

सूतल गँवावे, जे जागे, से पावे
मंजिल प पहुँचे, जे दउरे आ धावे
मँगला से देला ना भिखियो जमाना
मारेला ठोकर हजार,
बतावऽ भइया, जगब ऽ त कहिया ले जगबऽ ?

●●●

रपट/रिपोर्ताज

लोकतंत्र में 'लोकभावना' के बेमिसाल जीत

❑ प्रगत द्विवेदी

घाम–बरखा–कीचड़ आ अनगिनती कठिनाइयन का बावजूद, हजारों–लाखों लोगन का आँखी का सोझा दिल्ली का ऐतिहासिक रामलीला मैदान में बारह दिन ले चलल अन्ना के अनशन टुटला के खबर से, पूरा देश जीत का खुशी से छलक उठल। अनगिनत अवरोधन का बावजूद, भादों का महीना में तिक्खर घाम, तेज बरखा, कीचड़ कानो का फजिहत आ असुविधा के परवाह ना कइके, लोग अन्त ले डटले रहि गइल। ना खाए–पिये के चिन्ता, ना सूते–बइठे के चाव, बस एके भाव – 'भारत माता की जय ! वन्दे मातरम् !!, इन्कलाब जिन्दाबाद !!' जन लोकपाल बिल संसद में ले आवे खातिर, लाखन–लोगन के, समर्पित, संकल्पित जागरन–भाव के पवित्रता आ आंदोलित शक्ति के दुनियाँ 13 वां दिने, अन्ना के अनशन टुटला का बाद देखलस। जन–जन का हृदय में भीतर ले जगह बना चुकल, अपना प्रति भरोसा जगा चुकल अन्ना खातिर, स्वतः स्फूर्त जन समर्थन के आन्ही। हमनी का लोकतंत्र के आगे कवन दिशा दी, ई अलग बात बा, बाकिर राजनीतिज्ञ, राजनेता, भ्रष्ट–तंत्र, आ देश के अगिला पीढ़ी खातिर कई गो सबक जरूर दे दिहलस।

भाई–भतीजावाद, घपला–घोटाला, दलाली, रिश्वतखोरी, हवाला, पक्षपात, अइसन अनेक बाँहि वाला सर्वव्यापी भ्रष्टाचार, सीना पर चढ़ल मँहगाई आ कुशासन के दुख झेलत लोग, आजिज आ चुकल रहल हा। जनता का शासन में जनता के खतियावे खातिर केहू तइयारे ना रहल। चुनल जनप्रतिनिधियन क झूठ असरा, अफसरन क अफसरी, सरकारी तंत्र क ढुलमुल रवैया, पक्षपात आ भ्रष्टाचार, ई जान लीं कि खेती आ पढ़ला–लिखला से नोकरी पवला तक कुछऊ सोझ, साफ आ आसान ना। अइसना में भारतीय समाज आ लोकतंत्र खातिर भ्रष्टाचार के बड़हन मुद्दा बना के, जन लो. कपाल बिल पा. रित करावे खातिर एह बेरी जब अन्ना हजारे आ उनकर सहायक मैदान में उतरलन स त हजारो–लाखों लोग खुद ब खुद समर्थन में सड़क पर उतरि आइल। पछिला बेर का जंतर–मंतर वाला आन्दोलन–अनशन का बाद सरकार से मिलल धोखा, उनका खातिर सबक रहे। एही से एह बेर जन–भावना आ जनशक्ति से शासन आ सत्ता के नीक से रूबरू करावे का संकल्प का साथे दिल्ली आइल, अन्ना देश के अगिली पीढ़ी आ राष्ट्र के नवनिर्माण के उज्जर भविष्य के सपना साकार करे क राह देखावे खातिर अनशन आ आंदोलन करे उतरलन त सरकार के पैंतराबाजी शुरू हो गइल।

15 अगस्त के सबेरे लालकिला से प्रधानमंत्री जी भाषन दिहलन त इहो कहलन कि "कुछ लोग देश में गड़बड़ी फैलाने की कोशिश कर रहे हैं।" ओही दिने साँझि खा अन्ना राजघाट, गाँधी जी का सोझा दू घंटा चुपचाप बइठलन। चिन्तन आ संकल्प खातिर बइठल 74 बरिस के ओह बूढ़ कर्मयोगी खातिर दिल्ली क पूरा पुलिस तंत्र आ सरकारी अमला चौकन्ना आ बेचैन रहे। 16 अगस्त के उनकर अनशन शुरू होखे का पहिलहीं, उनका ठहरे वाला जगह पर पुलिस क फउज हाजिर। बेचारू के अकारने गिरफ्तार कइ के अस्थाई जेल छत्रसाल स्टेडियम, फेर तिहाड़ जेल ले जात पुलिस के, ई तनिको गुमान ना रहे कि दिल्ली

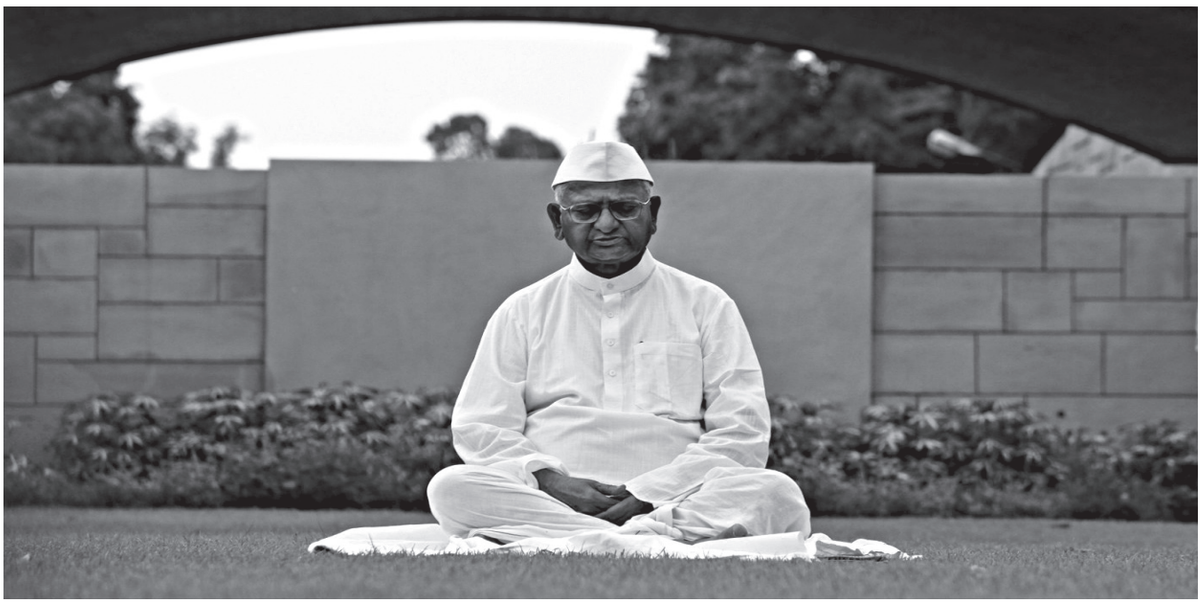

15 अगस्त सांझ खा राजघाट पर गांधी जी के समाधि स्थल पर संकल्प लेत अन्ना हजारे

का सड़कन पर अतना जन सैलाब उमड़ि जाई। स्वतः स्फूर्त लोगन क नारा लगावत अइसन जन–ज्वार उमड़ल कि ओमे जाति, वर्ग, ऊँच–नीच, उमिर, लिंग कूल्हि क भेद मिटि गइल। दिल्ली–त–दिल्ली, देश का हर प्रदेश, जनपद, कस्बा, गाँव में आग नियर खबर फइलल आ तिरंगा लिहले, 'अन्ना के गाँव रालेगन सिद्धि से, मुंबई के 'आजाद मैदान' तक फइलत जन–बिरोध पूरा महाराष्ट्र के चपेट में ले लिहलस। दिल्ली क इंडिया गेट प जरत मोमबत्तियन का साथे लाखन लोग उतरि आइल। तिहाड़ जेल का बहरा चारू ओर हजारन लोगन क मूड़िये मूड़ी। सरकार का भितरे भितरे भय घेरले रहे, तले न्यायालय का नोटिस से सरकार भौंचक्का। जल्दी–जल्दी अन्ना के बिना शर्त रिहाई के घोषणा कइल गइल बाकि जनता हटे तब नऽ ! जनता जागत रहि गइल।

अन्ना तिहाड़ जेल क वातावरन बदल दिहलन। उनकर पूरा टीम दूध क जरल रहे, स्वामी रामदेव के अहिंसक आंदोलन के हश्र देखले रहे आ देश क जनतो देखले रहे कि लोकतंत्र में, सरकार कइसे असहमति आ विरोधी सुर के दमन करेले। लोगन का भीतर एह सरकार के अलोकतांत्रिक रवैया, राजनीतिक दाँव पेंच आ अड़ियल दमनकारी व्यवहार का प्रति बइठल आक्रोश, अन्ना का आह्वान पर शांतिपूर्ण आ अनुशासित विरोध का लावा नियर फूटल। सहिष्णुता, धीरज आ उत्साह के अइसन सत्याग्रही आंदोलन देखि के दुनिया भर क लोग अचंभित रहे। सियासी दाँव खेलत राजनेता, संसद के सर्वोच्चता के चुनौती देबे वाला रूप में एह आंदोलन के बदनाम करे क भरसक कोसिस कइलन बाकि रहस्य, निर्णय–अनिर्णय के स्थिति आ भँवरजाल बुनत सरकार : रणनीतिक, राजनीतिक आ नैतिक हर रूप में हारत नजर आइल।

अन्ना के, उनही का शर्त पर रिहाई करत सरकार बड़ा बेचारगी से, आंदोलन–अनशन खातिर रामलीला मैदान सउँपलस आ फिर तिहाड़ जेल से जलूस निकलल त ओह 74 साल के बूढ़ के व्यक्तित्व आ भाषा क जादू, अन्ना का आन्दोलन के ताकत बयान कर दिहलस। लइका, बच्चा, बूढ़, मरद मेहरारू, छात्र, छात्रा, नोकरीपेशा वाला लोग, वकील, डाक्टर आ घरेलू कामकाजी महिला सबके सब साथ खड़ा नजर आइल। अन्ना के आह्वान भइल – "आप साल भर अपने लिए काम करते हैं। आठ दिन देश के

लिए, अपनी आगे की पीढ़ी के लिए दे दीजिए।" आ एकर ई असर भइल कि स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी त बंदे भइल, नोकरी वाला छुट्टी ले लिहलन, कतने नोकरी छोड़ि दिहलन। टेम्पो वाला, रिक्शा वाला, बंबई के डिब्बा वाला, हीरो–हिरोइन, कला आ मीडिया से जुड़ल हजारो लोग अन्ना का आंदोलन में शामिल हो गइल।

देश का कोना–कोना से, हर वर्ग, हर तबका से उभरत विरोध के आवाज जन–ज्वार आ जनसैलाब क अइसन नजारा पेश कइलस कि ओसे संसद क गलियारो अछूता ना रहि पवलस। सत्ता–पक्ष, विपक्ष आ राजनीतिक दल ऊहापोह में रहे। कुछ डर रहे, कुछ खीझ, कुछ कुन्ठा, कुछ सत्ता क गुमान, कुछ सियासी फायदा लेबे क जोड़–घटाना। ऊपर ऊपर सभे समर्थन क बात दोहरावत रहे, बाकि भीतर भीतर ऊहे फायदा–नुकसान आ तर्क–कुतर्क। कुछ सांसद लोगन क विरोधी आ गुमराह करे वाली टिप्पणी आ कमेन्ट पर ऊहापोह आ फैसला करे क हिचकिचाहट सरकार के अउरी दुबिधा में डललस। सत्ताधारी आ विपक्षी लोगन क ई हाल देखि के अन्ना के फेर ओही सादगी आ बेलाग लपेट का भाषा में हुंकार भरे के पड़ल। दृढ़ निश्चय आ विश्वास से भरल अन्ना के आवाज गूँजल, "पूरे देश में अपने अपने सांसदों से पूछें, धरना दें, घेराव करें और अहिंसापूर्वक सत्याग्रह जारी रखें।" अन्ना का अनशन आ तप में शरीर के ना आत्मा के बल रहे। ऊ सामने खड़ा हजारन लोग, देश का कोना कोना में टी.बी. का सामने खड़ा लोगन से कहस – 'मुझे तो आप सब से ऊर्जा मिल रही है। मेरी चिन्ता मत करो। मैं ठीक हूँ।' आ साँचो ओह खाली पेट, अनशन करे वाला बूढ़ कर्मयोगी के नारा – 'भारत माता की जय, जतना दमखम से उभरे कि सुनवइया क जोश बढ़ि जाव।'

सजग आ संवेदनशील मीडिया जगत त अन्ना का आन्दोलन में अतना तत्परता आ समर्पन भाव देखवलस कि लागल कि ऊहो जनता का साथ, हर घड़ी खड़ा बिया। चैनलन क लगातार 'लाइव–कवरेज', अखबारन क खबर, संपादकीय आ जीवंत रिपोटिंग आ आलेख, ओकरा के 'लोक–इच्छा' आ 'लोकमत' क सच्चा पैरोकार बना दिहलस। अन्ना के धीरज, जज्बा, अनुशासन आ संघर्ष क्षमता क त्वरित

आ अर्थवान रिपोर्टिंग से 'चौथा–स्तम्भ' क गरिमामयी छबि अउर निखरल। संसद के राजनेता लोगन क टेढ़–मेढ़ बयान, अड़ंगेबाजी आ 'कमेन्ट' क निहितार्थ उजागर करे में मीडिया क 'रोल' सराहे जोग रहे। कूल्हि अड़ंगा कानूनी अड़चन, तिकड़म, टालमटोल आ आपुसी खींचतान के नतीजा में, अनशन का दसवाँ दिने ई खबर आइल कि मामला जस के तसे बा। सहयोगी किरन बेदी, प्रशांतभूषण, आ केजरीवाल कूल्हि प्रयास आ सरकारी बैठकन से निराश लवटल आ मंच से कहल 'सरकार ने डाँटा, और वहीं खड़ा कर दिया जहाँ हम अप्रैल में खड़े थे।' लमहर उपवास से कमजोर अन्ना खातिर प्रणव दादा किहाँ से, लगभग ठुकरावल, ई लोग निराश रहे। आध्यात्मिक गुरु भैय्यूजी महाराज के कोसिस एक बेर फेरु फेल।

दस दिन क उपासल, हराँसल अन्ना जी क वजन सात किलो ले घटि गइल रहे, तब्बो कूल्हि निराशा आ मायूसी के घटाटोप के चीरत, रात खानी अन्ना हजारे क संकल्प आ विश्वास भरल ओजस्वी भाषन हमके सुने के मिलल आ रोआँ–रोआँ खाड़ हो गइल। सभका भीतर नया साहस, नया बल क संचार भइल। अपना चिर परिचित भाषा में भारतमाता के जयघोष का बाद कहलन, "मुझे कुछ नहीं होगा। आप सब मेरी चिंता मत करें। आपसे ताकत मिल रही है मुझे। अभी तो मैं 02 किलोमीटर दौड़कर आसकता हूँ। मेरी बिनती है आपसे कि आप हिंसा मत कीजिएगा ! वे मुझे जबरन उठाकर ले जाएँ तब भी रोकिएगा मत, कोई हिंसा न हो। राष्ट्रीय संपत्ति, हमारी है, उसको कोई नुकसान न हो। किसी भाई, बहन या नागरिकों को नुकसान न हो, बस कल से सांसदो का घर घेर लेना, धरना देना, पार्लियामेन्ट घेरना। वे गिरफ्तार करें तो हँसते हुए जेल जाना। राष्ट्र के लिए जेल जाना आभूषन और अलंकार है पर मेरी एक बिनती आप जरूर मानना कि हिंसा मत करना। हिंसा मुझसे सही नहीं जाएगी। वे तो यही चाहते हैं कि हिंसा हो और वे कारवाई करें और आंदोलन तोड़ें। इसलिए अहिंसापूर्वक आन्दोलन करते रहना।"

एह भाषण के जहाँ जतना असर होखे के रहे, ऊ भइल। सत्ताधारी दल आ विपक्षी दल आपन सियासी दंभ छोड़ि के अब बहुत ठोक–पीटि के आपन कदम उठावे लागल। भा.ज.पा. आ वामपंथी दूनों विपक्षी दल खुलि के कहल कि हम अन्ना के समर्थन करब। सत्ताधारी दल आ ओकर समर्थक दलन के स्थिति साफ होखे का बजाय अउर अस्पष्ट होखे लागल। कानूनी पेंच, सियासी तिकड़म, संविधान आ संसद के सर्वोच्चता के दुहाई, फेरु राहुल गाँधी के "बाजी पलट देवे वाला" भाषन आ धारा 184, 193 के अवरोधक में अन्ना टीम का माँग का अनुसार सहमति क प्रस्ताव पास ना हो पावल। जनता के निगाह लगातार एही प रहे कि संसद में के, का कइल ? आ के का कहल ? सत्ता पक्ष के राजनीतिक लोगन क, ना–नुकुर, टेक्निकल दाँव आ एक–एक कमेन्ट पर उबियाइल खिझियाइल जनता मने–मन कुछ तय करत रहे। लालू जी के उपहास, राहुल जी के भाषन, मायावती जी के अन्ना टीम के चुनाव लड़े आ सरकार बनावे के चुनौती, मुलायम जी का पार्टी के लोगन के विरोधी सुर, सब कुछ अन्ना के दृढ़ संकल्प, इच्छा शक्ति आ सत्याग्रह का आगा फीका पड़ि गइला जनता के धीरज बनल रहे, एकरा खातिर अन्ना जी क सरल–सीधा बयान। लोगन का समझ से ई परे रहे कि कइसे संसद के सर्वोच्चता के चुनौती दिहल जाता ? अन्ना जी अतने कहले कि जबले जनता के इच्छा आ भावना क सम्मान, संसद के लोग ना करी, ओकरा सर्वोच्चता आ पारदर्शिता प सवाल खड़ा होई। आखिर अपना देश के भलाइये खातिर कानून बनावे के संसद से कहल आ लाखों–करोड़ों लोगन क कहल काहे ना सुनल जाई ? सांसद उहे बा, जेके राष्ट्र आ जनहित खातिर, जन–इच्छा के अभिव्यक्ति देबे खातिर, संसद में भेजल गइल बा। अनशन के एगारहवाँ दिन आम सहमति बनावे में भा.ज.पा., वामदल का स्पष्ट समर्थन का बादो मामिला अटक गइल। प्रस्ताव पर ना वोटिंग

भइल, ना ऊ पास भइल। आखिरकार बारहवाँ दिने अन्ना के तीनों माँग लोकपाल बिल में डाले खातिर दिहल प्रस्ताव रात के पास भइल। प्रधानमंत्री जी "जनता की इच्छा" के स्वीकार करत, अन्ना के बिलासराव देशमुख का हाथे सनेस पठवलन कि प्रस्ताव पारित हो गइल अब अनशन तूरीं। अन्ना कहलन कि ई जनसंसद क जीत हऽ अब अनशन काल्ह सबेरे दस बजे तूरब।

अन्ना नियर, सीधा–सच्चा समाजसेवी, ईमानदार देशभक्त के निस्वार्थ भाव से भ्रष्टतंत्र का खिलाफ छेड़ल गइल एह गाँधीवादी आन्दोलन के ई जीत, सचहूँ लोकतंत्र का इतिहास में एगो महान जीत बा। ई जीत एसे महान बा कि ई आधुनिक भारत का साथ साथ आधुनिक संसार के कई गो सीख आ सबक दे गइल। तेरहवाँ दिन अन्ना जब लाखन लोगन का सामने सिमरन आ इकरा नाँव के छोट लड़िकिन का हाथे जूस पी के आपन अनशन तुरलन त लाखों लोग एह ऐतिहासिक घटना के जीवित गवाह रहे। ई आन्दोलन साबित कइलस कि संसद से बड़ जनता के संसद हऽ। जनता के नजरअंदाज कइ के मनमाना ढंग से आ हेकड़ी से लोकतंत्र ना चले के चाहीं। एह जीत से लोगन के ई भरोसा भइल कि भ्रष्टाचारमुक्त राष्ट्र के नवनिर्माण खातिर आगा चले वाली लड़ाई में युवाशक्ति आ शिक्षित जन शक्ति के दशा आ दिशा का होई ? अन्ना कहबो कइले कि अभी परिवर्तन की शुरूआत हुई है, आगे चुनाव सुधार आ सत्ता के विकेन्द्रीकरण खातिर लड़ाई होई। देश के किसानन के अधिकार आ शिक्षा, रोजगार खातिर लड़ाई होई। ई पहिली जीत एह माने में गौरवपूर्ण बा कि तेरह दिन के एह जन–संग्राम में कहीं कवनो हिंसा, उपद्रव आ अराजकता देखे के ना मिलल। संघर्ष में शामिल लोगन के, आ खास कर नवयुवकन के अन्ना सबक दे गइलन कि खाली 'अन्ना' के टोपी पहिनला से केहू 'अन्ना' ना बरेला। 'अन्ना' बने खातिर 'कथनी आ करनी' एक करके के परी। अन्ना बने खातिर शुद्ध आचार, शुद्ध विचार, निष्कलंक जीवन, त्याग कइल आ अपमान के सहल सीखे के परी। एह पांच मंत्र पर चलत रहीं त, देश के हमरा लेखा कई कई गो अन्ना अपना आपे मिल जइहन।

साँचो अन्ना देश के नायक आ 'आइकान' बन गइलन। लोकप्रियता क कूल्हि रेकाड खतम करत, हक, आजादी आ न्याय खातिर लड़ाई लड़े के नया राह देखावे वाला प्रेरक योद्धा बन गइलन। अपना सरलता, सादगी आ साधारणपन में, सत्य, अहिंसा का गाँधीवादी राह के प्रासंगिकता फेर से सिद्ध करे वाला भारत के नया गाँधी के सेल्यूट ! सलाम !! ●●●

कहानी

कायर

❑ विष्णुदेव तिवारी

चनरमा सितारन के झुरमुट में एह तरी अलोपित होत जा रहल बाड़े, जइसे चकवढ़ के झोंझ में सोनहुला गेना डुगुरल जात होखे। लाश जर रहलि बा, ओह आदमी के अंत हो गइल, जेकरा मन में केहू खातिर कवनो इरिखा आ अमनख ना रहे। बाकिर ई अंत अइसन ना भइल, जइसे कोंढ़ी निकलल, फूल उगल आ झर गइल। अइसन त रोजे होला। जइसे मुर्गी हलाल कइल जाले..... केरा के खोइलाची जइसे ओकाचि दिहल जाला आ ओकर गूदा एक ओरि लरकि जाला, ओसहीं ओकर गरदन. ....। कतना सुंदर गोड़ रहले हा स.....। छोटी–छोटी अँगुरी ! आगि उतरहिया बहला से गोड़े देने फफनति बिया आ तनिकी थहराइ के ऊपर लहर मारऽतिया त तरवा में शंख के फोटो बन जाता बा। एने–ओने के बा, के बइठल, के खाड़ बा, केकरा मुँहे माटी बा, केकरा आँखी पानी.... हमरा कुछुओ नइखे लउकत ! हम त बस इहे सोचऽतानी कि ऊ हमरो के मारि देले रहिते स, त हई दाह ना नू सहे परित !

हमार घर गाँव के एकदम पुरुब ओर बा.... जहाँ तरियानी जाए के छवर 'बुढ़वा इनार' पार करेले, ओकरा से दस लट्ठा आगे। अगल–बगल हमरे जाति के लोग बा। दिन भर एने–ओने हाड़ ठेठा के आवेला त पाकिट के नोट तिलंगी बन जाला आ बचन के गुमटी के चक्कर मारत शराब के पाउच में बदल जाला। तब लाउडस्पीकर के गउँजार में, तावा के छनक के संगे दुबरो आवाज आन्ही बन जाले। कबो हिचकी, कबो कवनो फूहर फिल्मी गीत। जो बिजुरी–बत्ती आ गइल त जनाला.... दुआरे–दुआरे प्रेत नाचत होखन स।

तब हम अउँजा के खिड़की बन क लेनीं आ खटिया प ओलरल आँख मुँदले तब तक पलरल रहेनी, जब तक माई खियावे खातिर चिचिआए ना लागे।

बाबूजी के आदत ह, सँझिए खाइके सूति जइहें, काहेंकि होत फजिरे उनका छव बजिया बस पकड़ के बगसर जाए के होला। ओने से, गधबेर होखे से पहिले, झोरा में तरकारी भरले आ कबो–कबो ओकरा संगे कवनो मिठाई भा सिंघाड़ा के खदोना लिहले लवटेले। ओह दिने ऊ हमरो के पँजरा बइठा के दिन–दुनिया के बात समुझावत पढ़ाई–लिखाई के हाल–चाल पूछेले.... देखऽ चंदन ! पढ़ला–पढंवला के माने खाली पेटे भरल ना होला। एकरा से आगे बढ़ि के आदमी बने के मकसद आ साँच खातिर खाड़ होखे के जमीनो खोजल होला। बे–जमीन वाला आदमी अउँजा के हार माल लेला आ कुसंग में परि के जिनिगी तबाह क लेला।

काल्हु जब माई खाए के बेरा चकचिहाइ के बोलल कि त्रिभुअन बबुआ बोलावऽ तारे, त हम अकुतइले उघारहीं गोड़े दउरत दलानी में अइनीं आ अकबकाते कहनीं..... का बात बा, बबुआ ? एह बेरा? सब ठीक बा नूं ?

'..सब ठीक नइखे हो !' कुछ देर ले चुप रहला के बाद बबुआ कहले..... एही से त अइनी हां। खरउरिया बड़ा मनबढ़ हो गइल बा।

माई दूनो आदमी के मुँह ताकत रहे, कहलस... ऊ त कहिए के मनबढ़ू ह। दिनो–रात पिएला, बाकिर राउर त बड़ा इज्जत करेला। कुछ कइलस हा का?

..... ना । का जाने पिउला के भक् में कि केहू के सिखवला में, भगवान जान'तारे, सुननी हां कि बाबूजी के खूब गारी देलस हा।

.... बदमाश ! हम कहनीं ..... आ ओकर जीभ

ना जरि गइल हा ? जाए दीं। अब एह रात में .....

माइयो कहलस कि रात में केहू से कुछ कहल–सुनल ठीक नइखे। हम देखनीं, ओकर मुँह झाँवा अस करिआ गइल रहे।

आसमान में चुप्पी परसरल बा। मरघट में चारू ओर शब्द बाकिर कवनो शब्द के कवनो अर्थ नइखे। जनाता, हर आदमी प्रेत हो गइल होखे। अबे–अबे तनी झींसी परलि हा। आसमान के आँखि के लोर खतम हो चुकल बा। दरिआव में सूंस घुलटिया खा रहल बाड़े स, अइसन बुझात बा। हवा शांत, बाकि मन अशांत बा।

हम सूते के तइयारी करत रहीं। आँख गते–गते भरमे शुरु भइले रहे कि बबुआ एक बेर फेरु हाजिर। हमार बाँहि धरत, हमरे खटिया प बइठ गइले आ फुसफुसइले .. सुनऽ! ऊँघी नइखे लागत!

..... खइनी हां ?

..... ना। केहू ना खाइल हा। बाबूजी बहुते उदास बाड़े आ खिसिआतो बाड़े। कहऽ तारे..... तहरा गाँवा–गाँई घूम के नन्ह–जतियन के धइ धइ के पढ़वला के का फायदा, जब उहनी के कवनो इज्जते ना करिहें स। बतावऽ अब हम मूड़ी उठा के कइसे चलबि ?

..... रउआ का कहुईं ?

..... का कहितीं ? कहुअन – जो आजु हम तोरा अइसन जवान रहितीं त देखा दिहितीं कि अन्हर–भइँसा होखला के का मजा भेंटाला !

हमरो नीन टूट गइल रहे। पुछुवीं.... पूरा बात बताईं, ई सब कइसे भउए !

बबुआ कहे लगले..... बाबूजी सुंदरवन से गाँवे लवटत रहले हा..... कोड़ारी के बीचे–बीचे। तूं त जानते बाड़ऽ; बरसात में तरियानी वाली छवर के दशा ! खाली सुअरिए भा सूअर बनल अउरी केहू जा सकत बा.....

..... मए बिहार के इहे हाल बा। हम कहुईं।

..... बाबूजी कहत रहुअन.... राहिए में पेट में मरोड़ अस उठुए। सोचुईं ..... घरे पहुँच के .... बारी कोड़ार पार क के जइसहीं छवर पार करे चलुईं त जनउए अब आगे ना बढ़ल जाई। ..... अब एको डेग आगे बढ़वला प..... त रामलाल के टमाटर वाला खेत में किनारे बइठ गउवीं। ओकरा के खरउरिए बोवले बा। मन में लाज त लागते रहुए बाकिर .... का करितीं ? सोचत रहुईं, एने पानी केने मिली आ धोती उठवले केने–केने घूमबि ? तले गारी देत दउरल आवत बा नूं। ..... आके जमदूत अस कपारे प खाड़ हो गउए। हमके कठमुरुकी लाग गउए। रहगीर लोग मुसुकी मारत राह ध लेत रहुए आ हम क्रोधे, घिरिने, आ लाजे..... ! आजतक के जिनिगी में केहू ए तरी बेदिन ना कइले रहुए, त्रिभुवन..... !

हम बबुआ के दरद समुझत रहीं। उनक. रा टहकार–गोर मुखारी प अइसन बालक के अलचार–भाव डूबत–उतरात लउकुए, जे परसादी के आशा में तरहथी फइलवले होखे आ ओकरा के एक कुल्ला थूक मिलल होखे। 'बुढ़वा इनार' के पाकड़ प गिरहस्थी जमवले बकुला अइसे हल्ला कइले स, जइसे गीध करेले स'।

हम बबुआ के दरद समुझत रहीं। हमरा आजुओ ऊ जग्य वाला मंच आ ओह मंच से बबुआ के कइल उद्घोष जस के तस याद बा। बबुआ कहले रहले..... आजु यज्ञ भ्रष्टता, अनैतिकता आ मउगड़ाई के पर्याय हो गइल बा। अइसन कवनो यज्ञ ना मिलल जवना में सुंदर आचरण के दर्शन होखे। रउआ कहऽतानी हम जन–कल्याण करत बानीं, का साँचो ? रउआ प्रवचन देत बानीं – भगवान के कृपा के बिना एगो पतई तक ना डोले, त चंदा माँग के हमनी के काहें डोलावत बानीं ? जाईं, भगवाने के

सिंहासन डोलाईं। आ तनी हऊ सर्टिफिकेट त देखाईं, महाराज जी, जे भगवान रउआ के मोहर मारि के देले बाड़न कि....

हमरा जस के तस याद बा कि सोनबरिसा वाला जग्य में जब मस्तराम बाबा बबुआ के ई बात सुनले रहले, तब उनका से आपन क्रोध ना अड़ाइल रहे आ ऊ मंचे प, जनाइल, अपना डंटा से बबुआ के कपार फोरि दीहें – नमक हराम ! ब्राह्मण होकर ब्राह्मण–धर्म को गाली देता है। पता नहीं, तेरे जैसे कितने ऐरे–गैरे आए, पर धर्म का एक छोटा तिनका भी नहीं नोंच पाए। ये लट्ठ तेरे .....

ओकरा बाद पूरा जवार साफ–साफ दू गोल हो गइल रहे आ लागल कि अब सत्यानाश होइए के रही। हमरा अचरज भइल रहे..... बबुआ सबके बिनती करत समुझावत आ सबसे हथजोरी करत पिआसल पंडुक अस दउरत रहले ..... भइया, रउआ सभे हमार बात ना समुझुई। जा। हम आपन बात मस्तराम बाबा के बारे में ना कहत रहुईं। इहाँ जइसन साँचो के जो संत हो जासु, त भारत अबो आपन पुरनका गौरव पावे के हकदार बा।

बबुआ अब मन बना लिहले कि सरकारी नोकरी कोटि–काले ना करबि। तेकरा बाद सरकारी नोकरी छोड़ के भर जिनिगी पढ़े–पढ़ावे वाला अध्यातम नधले। लोग अइँठ–अइँठ छीप काटसु.... 'बिनोबा बनल बाड़े त्रिभुवन दूबे। आरे, बिनोबा के कपारे त इन्दिरा रहली हा, तहरा कपारे के बा, बाबा ?'

सब जानऽता, बबुआजी, जो ना रहिते त हमरा अस पासवान कबो शिक्षा–मित्र ना भइल रहित।.... जइसे सूर्य भगवान हनुमान जी के पढ़वले रहले। पइसे से ना सब होला। दसवाँ से लेके बी. ए. तक के हमार पढ़ाई ऊ एगो भाई के तरी कइले, ई हिन्दुस्तान के राजनीतिक इतिहास कबो ना बताई।

लाश जर रहलि बा। कइ गो लाश जरत बाड़ी स। अबे–अबे एगो मेहरारू के लाश आइल हा। ओकरा पीछे–पीछे हथकड़ी लगवले ओकर मरद। आगे पीछे चार गो पुलिस वाला। दू गो के मोंछ पकठाइल। एगो भुंड कइले बा आ एगो सफाचट। भुंडा मरघट के लुतुकी से सिगरेट धरा के धुँआ ओकाच रहल बा। पुलिस के देखते हमरा पुरानन वाला यमदूत याद परि जाले स..। ई हमरो भिरी अइहें स। उनका सबसे नजदीक हम्हीं रहुईं। ई केहू से छुपल नइखे.... त पुलिसो जान जाई...। भगवान नेकी कइला के फल अतना जबून होई त नीक करे के हिम्मत कवनो नेक आदमी ना जुटा पाई आ तब हमनी के धरती आदमी के ना, निसाचरन के लेवाड़–घर होके रहि जाई। चमकी में के धूरा भर मुट्ठी लेके मधिमाह जरत लाश पर फेंकत बाड़े। एगो पुलिसवा, कहऽता..... त्रिभुवन दुबया है नूं ? साला, फारवर्डों की राजनीति करता था !

हमरा दम घुटला से ओकाई बरे लागत बा। हम ओहिजा से हट के डोमवा के लकड़ी–घर के आगे बिछावल तिरपाल पर बइठ जा तानीं। एकदम अन्हार। मच्छर नसकर्त्ता भाई अस झपटत बाड़े स। इहनी के परपरात टूँड़ हमरा में ग्लानि भरत जा रहल बा। डोमवा खइनी ठोकत जइसे हमरे के सुनावत कहत बा... हऊ हथकड़ी वाला अपना मेहरारू के एह से मारि देलस हा कि ऊ राखी बान्हे अपना पड़ोस में चलि गउए। .... अब चाटऽ ना चउदह बरिसा लपसी।

हमरा उनकर बात ना मानल चाहत रहुए। हे भगवान ! ई का कहाई .... होनी कि कवनो महानाश के नेवता ? हम कहले रहुईं..... बबुआ, जाए दीं। पूछ–पाछ काल्हु कइल जाई। बबुआ ना मनुअन। गाई के बछरू अस हमरो पाछा–पाछा लागल जाहीं के रहे। खरउरिया के केवाड़ी बन रहुए। ढकचावते खुलि गउए। अँगना के पटिहाट प एके चदर ओढ़ले

दू आदमी सूतल रहुए। पता ना, आदमी के भीतर ऊ कवन बिनाश सुपुटल बइठल रहेला, जे सिधवा से सिधवा मन तक के तहस–नहस क के छोड़ेला। ऊ आगे बढ़ि के चदर घींचि लिहुअन आ लाते मारत जोर से चिचिअउअन.... खरउरिया ! हमरा बाप के गरिआ के मेहरारू संगे सल्तंत से सूतल बाड़े ? उठ ! उठ !''

हमरा ई जबून लागल। मरद मेंहरारू के सुतला में एह तरी जगावल ? ई कवन ओरहन दिहल भइल ? ई कवन संस्कृति ह कि संभरे के बेरि सब सद्बुद्धि सदाबरत में बिला जाई।..... बाकिर हमार होश तब ताखा पर से गिरल ढिबरी अस फफा उठल जब बबुआ जी घवदाह घाव अस चिल्हिकले.... 'आरे चंदन ! ई खरउरिया ना ह रे ई त चिल्होर पाँड़े हउअन ।"

कचाक ! ..... जइसे दउरत मन के उघार गोड़ में बबुर के काँट गड़ के टूट जाय। अंगना से सटल घर के केवाड़ी भड़भड़ात खुलली स। ओमे से कइ गो आदमी निकलुए आ बबुआ के चारू ओर से घेर लिहुए। कुछ देर तक ले त हमरा बुझइबे ना कइल कि कहाँ बानीं, का हो रहल बा ? हमरा कुछ ना सूझल। हमरा होश ना रहे। डरने जनाइल कि जान निकल जाई। छने में जान–परान लेके ओहिजा से अइसे परउईं, जइसे बिरिन्ही के बहत्तर खोंता हमरा के पिठिअवले होखँऽस।

आँख के सोझा ओही बबुआ के सुंदर मुँह आज मुरझइला फूल अस लटकल लगातार डोलत रहे। ●●●

शेष अगिला अंक में.....

देशवा के देशवा क धुन कब होई?

❑ राम जियावन दास ''बावला''

दोबिधा में मनवा हमार होइ जाला
कले–कले दिनवाँ पहार होइ जाला।

ढेर परिवार क अपार लागै रोटिया
देहिया ढुकावै बदे, फटही लँगोटिया।
लोग बतावैला, सुधार होइ जाला।
कले–कले दिनवाँ पहार होइ जाला।

निरगुन बतिया, सगुन कब होई?
देशवा के, देशवा क धुन कब होई
दूर जइसे नदिया, किनार होइ जाला।
कले–कले दिनवाँ पहार होइ जाला।

बिजुरी जरत कारी रतिया न जाले
बेचलो इजतिया, बिपतिया न जाले
कइसे मानी, देशवा, उधार होइ जाला
कले–कले दिनवाँ पहार होइ जाला।

पनिया क भँवरा, थिराई कि दौं नाहीं
'बावला' कबहुँ सुख पाई कि दौं नाही
जस तिछुअरवा कटार होइ जाला।
दोबिधा में मनवा हमार होइ जाला

●●●

शंख बाजे, बलाय भागे

(सतनरायन व्रत कथा क मनोभूमि)

❑ आनन्द सन्धिदूत

हमरा जीवन में जब कवनो खुसी के छन आवे त हमार माई सतनारायन भगवान के व्रत–कथा जरूर कहवावत रहे। हम कवनो परीक्षा में पास होखीं भा नोकरी लागल, त खुसी क उत्सव मनावे खातिर सतनरायन के कथा जरूर होखे। हमरो के सतनरायन भगवान के कथा बड़ा नीक लागे। पूरा घर गोबर से लीपल जाय, तोरण बन्दनवार टँगाय, परसाद में सि. जनी फल, पंजीरी आ पंचामृत बने, शंख ध्वनि होखे। सबसे ढेर मजा पंचामृत पीये में आवे। गोलगप्पा का पूड़ी में छेद कइके आ ओह में पंचामृत भर के मुंह में डलला पर पूरा शरीर ओकर खटमीठ स्वाद क ताजगी महसूस करे।

लेकिन ई कुल अनुभव माटी का मकान के बा। पक्का मकान में सतनरायन व्रत–कथा के अनुभव हमरा नइखे। जब पक्का मकान में सतनरायन भगवान के कथा क समय आइल त हमार श्रीमती जी पंडित जी से पूछ बइठली कि सतनरायन क कथा कवन ह ? सतनरायन का पोथी में जवन लिखल बा ऊ त कथा क महातिम ह। एकर उत्तर हमरा पास त रहे, बाकिर पंडित जी का पास ना रहे। ऊ आगे क पांच–छव गो दाँत देखाइ के हँस दिहलन। कहे के मतलब कि कथा तर्क आ अविश्वास पर कसा गइल आ कथा के मजा आ महत्ता खतम हो गइल।

साँच पूछीं त सतनरायन भगवान के कथा एगो संकल्प ह, आस्था विश्वास क एगो व्रत हऽ जवना का द्वारा हमनी का ई तय करींला जा कि सत्य आ ईमानदारी का जरिये जवन कमाइब ओही में सन्तोष करब आ ओही में से कुछ पइसा, समाज, धर्म आ दान–पुन्न खातिरो लगावल जाई। अपना आमदनी में से कुछ पइसा अँगऊ निकाल दिहले से परिवार में संस–बरक्कत आवेला, सन्तोष मिलेला आ जीवन खुसहाली से भर जाला। सतनरायन बाबा का व्रत–संकल्प से सहनशील हिन्दुत्व के रक्षो भइल। ई व्रत–संकल्प ओह जुग में हिन्दुत्व के एकजुट रखलस जब नवोदित इस्लाम अपना सादगी से भरल भक्ति–भाव से प्रचार–प्रसार का चरम पर रहे।

सतनरायन बाबा के व्रत–संकल्प एगो उत्सव धर्म (सर मोनियल वर्क) हऽ, जवना के मनावल (सिलिब्रेट) जाला। जहाँ कथा के आयोजन होला ओहिजा आनन्द आ उत्सव के माहौल होला। पूरा टोला–मुहल्ला, हीत–नात के सरधा से नेवतल जाला। लोग आपन–आपन परसादो लेके आवेला। पूजा का ठहर (ठौर) पर, केरा के पतई आ आम का पल्लो से सजावट होला। ई साफ लउकेला कि कथा का श्रवण से सुननिहार का अन्तरमन में 'सत' खातिर एगो वचनबद्धता आवेले। नीक काम खातिर संकल्प भाव आवेला।

हिन्दुत्व के जेतना पूजा धारा आ साम्प्रदायिक शाखा बाड़ी स ओह में कवनो में सतनरायन बाबा का कथा के विरोध नइखे। कारन कि एकरा में एगो

सन्देश बा। ई कथा हमन के, कम से कम आमदनी में विश्वास भरल सुरुचिपूर्ण आ सुन्दर जीवन जीये सिखावेले। सतनरायन भगवान का व्रत–कथा में कवनो खर्चा नइखे। एगो कहावत ह कि ई कथा बीस आना से लेके बीस लाख तक में हो सकेले। हमार माई के जइसन गँव रहे, ओहसन पइसा पोथी पर रख देव आ पंडित जी ओतने में खुश हो जासु।

एह घरी समर्थन, विरोध आ कुतर्क के फैशन चलल बा कि हिन्दू धर्म का कवनो सम्प्रदाय (बौद्ध आदि) या टी0 वी0 पर आवे वाला आध्यात्मिक गुरु लोग का प्रभाव में आके आस्था वाला परम्परागत उत्सव के उपेक्षा कइल। एह उपेक्षा से, आध्यात्मिक गुरु लोग का पास अकूत धन इकट्ठा हो जाता। जवना पर न इहन लोग का टैक्स देना बा न पंजयन शुल्क। एह नया फैशन में, ग्रामीण अंचल के कृषि–संस्कृति वाली परम्प. रागत पूजा जइसे हरियरी के पूजा, शायरी–बसौनी के पूजा, पँचइयाँ (नागपंचमी) के पूजा, कुलदेव भा देवकुर के पूजा आ सतनरायन के व्रत–पूजा से नाक–भौंह सिकोरत उपहास कइल जाता।

ई सही बा कि आस्था से जुड़ल महोत्सव समय–समय पर बदलत रहेला। प्राचीन काल में भग. वान श्रीकृष्ण के उदाहरण बा जे इन्द्रपूजा का जगह पर गोवर्धन पूजा चालू कइले रहलन लेकिन एकरा से समाज में कवनो बैमनस्य भा कटुता पैदा ना भइल रहे।

कई बेर परिस्थिति आ परिवेश का बदलियो गइले से परम्परागत ढंग से पूजा कइल सम्भव ना रहे। गांव के पूजा विधान शहर का निवास में लागू ना हो सके। पढ़ल लिखल, नया फैशन, नया आचार–विचार वाला लोगन क ऊ लोक 'मन' नइखे जवन पुरनकी संस्कृति में रहे। तबो एकर ई मतलब नइखे कि लोग अपना ज्ञान मद आ बिरोध का जोम में संस्कृति में रचल बसल मूल भावना आ मनोभूमि समझला का बदले ओकर बिरोध करे भा खिल्ली उड़ावे। ●●●

कविता

सात गो दोहा

❑ **हीरालाल 'हीरा'**

देखीं अपने आपके, तब देखीं संसार।
चलनी कवना गरब पर, करी सूप से रार।।

अइँठल तबले ठीक बा, जब होखे औकात।
गीदड़ भभकी व्यर्थ बा, बिगरी बनलो बात।।

तबले कीमति बीस बा, जब ले सोना टंच।
पालिस पीयर देखि के, कब ले भरमी पंच।।

हरदम तोहके ना मिली, बब्बुर नीचे आम।
बदलऽ अपना सोच के, कइल करऽ कुछ काम।।

केहू के ना रहल बा, सब दिन एक समान।
पोढ़ करेजा के करीं, होई फेरु बिहान।।

धरती छोड़ि अकास में, मति बिचरीं श्रीमान।
भहराइबि मुँह का भरे, मिली ना ठौर–ठेकान।।

आम नवे, जब फर लगे, होखे रेंड़ उतान।
उत्तम अउरी नीच के, बा अतने पहिचान।।

●●●

कविता

चवन्नी

(सरकारी तौर पर खारिज भइल मुद्रा)

❑ आनन्द सन्धिदूत

चवन्नी चलन से बाहर हो गइल
जवन कवनो जमाना में चानी के होत रहे
फेर निकिल के होखे लागलि।
चवन्नी खारिज हो गइलि
जवन कबो दिन भर क मजदूरी होत रहे
फेर एक बंडल बीड़ी सलाई क कीमत हो गइल।
चवन्नी अलोपित हो गइल
जवन कबो हमरा पाकिट में
बाइस दिन डगरत रहे आ हम
अपना के पइसावाला समुझत रहलीं
तब चवन्नी एगो इज्जत वाली मुद्रा रहे।
ऊ नापो–तउल के बटखरा बने
चवन्नी भर गांजा चार–छव अदिमी पिये
चवन्नी भर सोना में एक थान गहना बने
सिक्कन का आकाशगंगा में
चवन्नी चनरमा अस चमकत रहे।
अबहीं हाल तक चवन्नी में
धनिया, सोआ–पालकी, हरियर मरिचा
आ नीबू किनात रहे ।
तब एक अमेरिकी डालर खातिर
सात आठ रुपिया देबे के पड़े
देखते देखते डालर जबर होत गइल
आ चवन्नी कमजोर
(अब एक डालर पैंतालीस–पचास रुपया में बा)।
अब कल्लू कुंजड़ा
चवन्नी देखि अइसे हाथ हिलावसु
जइसे दोकान क माछी हाँकत होखसु
चवन्नी क कुछ ना मिलत रहे
न आइसक्रीम, न बबलगम/न माटी के खेलवना
अर्थशास्त्री लोग कहल कि
मांग बढ़ला से मुद्रा हलुक भइल जाता
चवन्नी क धातु, चवन्नी का कीमत से अधिक हो गइल
एहसे एके मेटल बजार में गला दिहल जाव।

चवन्नी चोरी हो गइल
बाकिर चोर का दाढ़ी में ना लउकल
मन्दड़िया, तेजड़िया
सुरसामुखी जनसंख्या
जनद्रोही उदारीकरण
कालाधन जमाखोर
शक्तिशाली देश/विदेशी ऋण अनुदान
चवन्नी के जिम्मेदारी केहू ना लिहल।

चवन्नी अलोपित हो गइल
बाकि मुई ना, जीयत रही
कामदेव नियर अदेह
किस्सा में कहानी में
मोन्हा में डाली में
खनन में खोदाई में
गनना गनाई में
चाहे कांग्रेस का चवनिया मेंबर वाला इतिहास में
चवन्नी जीयत रही।

●●●

'लोक' के कथा - 'लोककथा'

(कहवइया-सुनवइया लोक-मन आ ओकर कहनी)

❑ शिलीमुख

भोजपुरिये ना, संसार के कवनो लोकभाषा में, जवन साहित्य मिलेला, ऊ लोक कल्पना आ अनुभूति के वाचिक स्वर ह, जवना में आत्मीय–संवाद आ जीवन के सहज अभिव्यक्ति वाचिक रहल बा। एह वाचिक ('कहल–सुनल' आ 'सुनल–सुनावल') परम्परा में लोकजीवन आ लोक–संस्कृति के सहज भाव आ अनुभूत व्यावहारिक ज्ञान बा। सीखे–जिये आ मुवे क रंग–ढंग बा। एकर समझ ओह काल के इतिहास, संस्कृति आ समाजिक–जीवन–जगत के समझे में सहायक बा। डॉ. विद्यानिवास मिश्र जी 'वाचिक–परंपरा' के तह खोलत लिखले बानी – "वाचिक–परम्परा की हृदय–संवादिता का सूत्र था अपने वत्सल दादा–नाना से, अपनी दादी–नानी से कहानी सुनना – रामायण, महाभारत की, पशुओं के माध्यम से व्यावहारिक समझदारी की....."। एह सुनला–सुनवला में, मन में उठत जिज्ञासा आ उत्सुकता त शांत होते रहे, एगो व्यावहारिक समझ आ संस्कारो विकसित होत रहे।

लोगन का आपुसी–गपशप–बतकही में अपना व्यावहारिक ज्ञान के प्रकाशन ओहू समय में होत रहे, बाकि कवनो बड़–बूढ़ के कहे–सुनावे आ समझे–समझावे के महत्व दोसर रहे। लोगन में सुने खातिर रुचि आ उत्सुकता अनासो जाग जाव, जब कवनो बड़–बूढ़–अनुभवी, ओके कहनी भा कथा कहि के सुनावे। तब ज्ञान आ सीखे–समुझे के आधार पोथी ना रहे। सहजता आ निश्छलता से जवन कहनिहार का कंठ से निकले, ऊ आसानी से बुझा जाव – एकर कारन ई रहे कि ओह भाषा में एगो व्यक्ति के ना, ओ. करा परंपरा का पीढ़ी के अनुभव अपना आपे समाइल रहे।

लोककथा लोक के वाचिक–सिरजन हऽ –समय कटावे, उत्सुकता–जिज्ञासा शांत करे, मनोरंजन करे आ समझावे–बुझावे के अइसन दिलचस्प सिरजन, जवना में लोकजीवन के धारणा, विश्वास, प्रेम–आस्था, धर्म–अधर्म, नेत–कुनेत, घात–प्रतिघात, शंका–भय आदि अजब–गजब ढंग से प्रगट भइल बा। लोकरुचि का रुझान का अनुसार एमे राजा–रानी, राजकुमार–राजकुमारी, पशु–पक्षी, वृक्ष–जंगल, पहाड़–नदी सब बा बाकि अधिकांश लोककथा का केन्द्र में अधिकतर 'नारी' – प्रेमिका, मेहरारू, लउंड़ी, दाई, रखैल, महतारी, दादी, लइकी, बहिन, ननद–भउजाई, मयभा (सौतेली) माई, देबी, जादूगरनी, डाइन, टोनहिन आदि रूप में आइल बिया। 'सात भाई एक बहिन' के कहानी में भउजाइयन के सतावल एगो अइसन बहिन के मरम छुवे वाली लोककथा बा, जेके सुनला पर समाज के ओह कुरूप पक्ष के दर्शन होता, जेमे सात भाइयन का होते एगो बहिन के दारून–दुख उठावे के परत बा; बाकि अंत में भाइयन का सोझा साँच उजागर हो जाता आ सतावे वाली भउजाई दंड पावत बाड़ी सन। एही तरह से 'कउवा हँकनी', 'कठपुतरी', 'रानी आ लउंड़ी' आदि कथा में औरत के नीक आ बाउर दूनों रुप का जरिये चरित्र–निर्माण के प्रेरक सीख बा।

लोक कहानियन के लोकप्रियता के अन्दाज एही से लगावल जा सकेला कि ई अलग–अलग भाषा

में, अलग–अलग जगहा, अलग–अलग तरीका से कहल गइल बाड़ी सन; बाकिर कहानी के 'कथ' आ उद्देश्य एक्के बा। अइसने एगो 'चिरई' के न्याय खातिर कइल लड़ाई के मशहूर कहानी बा जवन गद्य–पद्य के मेल से कहल–गइला से बहुते लोकप्रिय भइल बा। ''एगो चिरई, भोजन का खोज में धाइ–धूपि के एगो दाना पवलस, सोचलस कि एके दू दाल क के ले जाइब त हमरा संगे हमार बाल बच्चा दूनों खइहन। ई सोचि के, दाल दरे वाली चकरी का खूँटा प बइठलि। जुगुत लगावे में चोंच क दाना गिरि के खूँटा में फँसि गइल। हार–थाकि के बढ़ई किहाँ गइल आ निहोरा कइलस – 'बढ़ई–बढ़ई तूँ खूँटा चीरऽ, खुँटवे में दाल बा। का खाईं, का पींहीं ? का, ले परदेस जाईं ?' बढ़ई डाँट के भगा दिहलस त ऊ सिकाइत लेके राजा किहाँ चहुँपलि–

"राजा, राजा तूँ बढ़ई डाँड़ऽ
बढ़ई ना खूँटा चीरे। खुँटवे में दाल बा
का खाईं, का पींहीं, का, ले परदेस जाईं।"

राजा अनसुना कइलस, त रानी किहाँ गइल। ओकरा ना सुनला पर साँप किहाँ, फेर ओके सजाय दियावे डंडा किहाँ, फेर भरसाईं में, फेर ओके बुतावे खातिर पानी वाली नदी किहाँ, फरियाद करत चल गइल। अंत में ओकर फरियाद सुनल गइल। फेर पानी का डरे भरसाईं, ओकरा डरे डंडा, ओकरा डरे साँप, साँप डरे रानी, फेरू राजा सुनलन। बढ़ई बोलावल गइल, ऊ गलती मानत कहलस –

हमके डाँड़ो – ओड़ो मत कोई
हम खूँटा के फारि देबि लोई।

अंत में खूँटा चिराइल। चिरई आपन परिश्रम आ संघर्ष के फल का रूप में दाल पवलस''। ई सूतल बेवस्था आ सूतल शासन के जगावे वाली अद्भुत प्रतीकात्मक लोककथा बा, जवना में एगो छोट क्षुद्र चिरई के साहस, संकल्प आ संघर्ष के जीत के परोक्ष कथन आजुओ कथा के प्रासंगिक बनावत बा।

दरअसल लोककथा, पीढ़ियन से चलल आइल लोकजीवन के प्रतिबिम्ब हऽ। ई समाज के साधारन आ असाधारन दूनों जीवन का संगे ओ. करा लौकिक आ अलौकिक रूपन के अपना रचना फलक में समेटले बिया। लोकाचार में, 'कहनी', 'कहानी' आ 'कथा', पूजा–व्रत आ पूरा जीवन–दर्शन से जुड़ल बा। सत्यनारायन स्वामी, अनन्त चतुर्दशी, प्रदोष व्रत, चउथ, जिउतिया, बहुरा, छठ आदि से संबंधित पुराकथा लोक–कहानी के रूप हऽ। कुछ कथा देवी–देवतन, लोकवीरन से जुड़ल बाड़ी स, त कुछ कथा परब–त्योहार, धर्म लाभ आ भखवती–मनौती का चलते सुनल–सुनावल जाला। लोकवार्ता में आदमी का साथ साथ ओकरा परिवेश के जीवंत करे वाला उपादान – गाछ–बिरिछ, नदी–पोखरा, ताल–तलैया, दह–सरोवर, पहाड़, जंगल, साँप–बिच्छी, चिरई–चुरुंग कवनो न कवनो रूप में प्रतीक नियर जोराइल–नथाइल बा। अइसहूँ सृष्टि में प्रकृति, आदमी से विलग नइखे त भला 'लोक' का 'कथा' में कइसे विलग हो जाई? लोक–संस्कृति के निर्माने प्रेम–दयालुता, भाईचारा, परदुखकातरता, देव आ दाता का प्रति आस्था, भक्ति आ विश्वास से भइल बा। हिन्दू धर्म के संस्कार, पूजा–व्रत मनुष्य के आचार–बिचार आ चरित्र के बनावे उठावे खातिर अपनावल गइल। एही से धर्मभीरुता अपना आपे लोक में पइठि गइल। लोक में वाचिक रूप से कहल 'कथा' से जवन विश्वास उभरल ऊ एह धर्मभीरुता का जरिये आस्था में बदलल।

व्रत–परब पर देबी–देवतन आ अलौकिक शक्तियन के महिमा बखाने वाली अइसनकी लोककथा

आजुओ सरधा–विस्वास से कहल–सुनल जाली सन। अइसन अलौकिक शक्ति खुश होके सब कुछ देली सन आ रंज होके सब कुछ छीन लेली सन। छठि मइया लोगन के नइहर, सासुर दूध–पूत देके मंगल करेली, एप्पर छठ 'परमेसरी' के कई गो कथा बा, रंज होली त कूल्हि छीन लेली। अक्षय नवमी, नागपंचमी, जिउतिया, बहुरा, तीज, चउथ आदि से संबंधित कतने कथा बाड़ी सन। ई कथा व्यक्ति से सुरू जरुर होली सन बाकि इन्हनी के विस्तार समाजिक, सामुदायिक होला। संसार का हरेक भू–भाग, हर भाषा–बोली में, लोकजीवन में अइसन लोककथा बहुत पहिले से कहल–सुनल जाली सन।

पहिले का जुग में जब आवे–जाए के साधन खाली दू गो गोड़, भा बैलगाड़ी आ थोड़ा–खच्चर–ऊँट रहे। लोग राह कटावे, भा यात्रा का ठहराव में थकान मेटावे आ राति कटावे खातिर गीत गाइ के भा कहनी सुनि–सुना के काम चलावे। खेत–खरिहान, मेला–हाट का पड़ाव में आदमी का साथे ई कहानी सैकड़न बरिस ले चलल। अपना छोट लइका–लइकिन के नाती–पोतन के, समझावे–बुझावे, सिखावे–बहलावे आ संस्कारित करे खतिर घर के बड़–बूढ़, दादा–दादी, नाना–नानी, महतारी–बाप रोचक–मनोरंजक कहानी कहे लोग। हमके इयाद बा, छोट पर बहुत ढेर कहानी सुने के जिज्ञासा का कारन हम बाबा, आ माई से कहानी कहे क जिद करीं ओम्मे से हमरा बहुत कुछ अजुओ जस क तस इयाद बा। बाबा एगो पद्यात्मक कहानी बड़ा चहकि के नाटकीय ढंग से सुनावस। रउवो सभ सुनीं – "एगो कौवा रहे। बड़ा धूर्त्त आ लालची। छोट–छोट कमजोर चिरइन के सतावे आ धउँस जमावे। एक दिन एगो फेंड़ पर अंडा दिहले बुलबुल किहाँ सबेरहीं जा धमकल आ धीरे–धीरे उन्हनी कावर घुसुकत बोले लागल, "खाउँ बुलबुल की अंडी !" मैं "खाउँ बुलबुल की अंडी !!" बुलबुल घबड़ाइल, फेरु दिमाग दउरवलस, आ प्रेम से बोलल, फजिरही–फजीरे बिना मुँह धोवले, अंडे खाए चलि अइलऽ ! बड़ा गंदा आ बेसरम बाड़ऽ। जा, पहिले मुँह धो आवऽ !"

कउवा उड़त गइल इनार पर त घइली में पानी भरत मेहरारु–ढेला मारि के भगा दिहली स। हार थाक के पोखरा पहुँचल। ज्यों पानी में ठोर डाले चलल, पोखरा डाँट के बोलल, ''आपन गंदा ठोर, डललऽ त खैरियत नइखे, जा भरुकी ले आवऽ, फेर ओसे पानी निकालि के ठोर धोवऽ'' ! कउवा कोंहार किहाँ गइल, कोंहार से बोलल – "दे भरुकिल्ला, भर पनिल्ला, धो ठुरिल्ला, फिर खाउँ बुलबुल की अंडी !" कोंहार का कहला पर कउवा खेत में माटी लिआवे गइल, कहलस, "दे मटिल्ला, गढ़ चुकिल्ला, भर पनिल्ला, धो ठुरिल्ला, खाउँ बुलबुल अंडी !" खेत कहलस ''खुरपी लिआ के कोड़ लऽ। जा लिआवऽ खुरुपी''। कउवा लोहार किहाँ जाके बोलल, "दे खुरपिल्ला, कोड़ मटिल्ला, भर पनिल्ला, धो ठुरिल्ला, खाउँ बुलबुल की अंडी !" लोहार हँसल, फिर सोच के कहलस, ''बइठऽ पहिले आगि में लोहा गर्म होई फेर पीटि के खुर्पी बनी, तब बेंट ठोकाई''। कउवा का बइठल–बइठल दूपहर हो गइल। लोहार लाल लोहा पीट–पाट के खुरुपी बनवलस, फेरु बेंट खातिर लकड़ी लियावे घर के भीतर गइल। कउवा एकदम अउँजा गइल रहे, बुलबुल के अंडा के इयाद में ओकरा मुँह में पानी आ जात रहे। सोचलस, खुरपी त बनिये गइल। जल्दी ले चलीं, ना त साँझ हो जाई। ई सोचि के ज्यों लाल गरम खुरपी चोंच में धइलस, चोंच सटि गइल आ ऊ ओही दरे, अइंठा के मरि गइल। ई हऽ गलत काम, लालच आ अउँजइला के नतीजा !! ई कहानी बाबा से सुने में

हमनी के बड़ा मजा आवे।

भोजपुरी में जादातर लोककथा गद्य में बाड़ी सन। राजकुमार, राजकुमारी, परी, काठ क घोड़ा, बइठा के उड़े वाली चिरई, उड़नखटोला, राक्षस, धूर्त्त, ठग आदि के बहुत रोमांच आ उत्सुकता जगावे वाली कहानी। गद्य क भाषा, लहरदार, आ पद्यात्मक। कवित्व वाला अंदाज में अइसन कहानी के नाटकीय ढंग से सुनावे वाला के कौशल, ओके अउर चटक, जीवन्त आ असरदार बनावेला। पद्यात्मक कहानियन के सुने क सवाद ओकर तुक–बइठाव में बा ऊपर से नाटकीय अंदाज ओके रोचक आ रसमय बना देला। एही तरे कुछ कहानी– गद्य–पद्य क अद्‌भुत मेल से सुनावल जाली सन। जइसे हम ऊपर दू गो कहानी सुनवलीं हँ। कुछ कहानी फ्री–वर्स टाइप, केंचुवा छन्द लेखा, रेघाइ–रेघाइ के कहल जाली सन जइसे – रानी कहली कि 'हम रहबि !' चेरिया कहलस, 'हम रहबि !' चाहे कवनो कहानी में – 'एक परुआ गइल, दुसर परुआ आइल !' या चाहे– 'बाभन बरुआ। हाथे पोथिआ, कान्हे धोतिया !' नगर नगर फिरलन, एक ठईं रुकलन!' ई कहनी सुनावे वाला बड़ा चतुराई आ कौशल से अइसन बोलेला कि कहनी अपना–आपे रसमय हो जाले। लोककथा के आपन रंग–ढंग आ मन–मिजाज बा, जवन सुने वाला लोकमन के गुदगुदावे आ ओकर मनरंजन कइला में सार्थकता सिद्ध करेला। अइसहीं एगो प्रचलित लोककथा 'पिड़िया' व्रत के बा

– अमवसा के राति रहे, परिवा के दिन रहे।
गाइ डाढ़ लागेले, भइंसि पखेवेले
चेरि–मोआरिनि पिड़िया लगावेली।
केहू लावल सार कोन, केहू भंड़ार कोन
लावत–लावत दू–'सोरह' भइल।

रानी पेठवली, 'चेरिया, तुँ जो रन में, बन में–
इन्हना खातिर गोइंठा–लकड़ ले आवे !
तले हम पीठा खाइ खनब–कूटब।'
चेरिया गइल रन में – बन में
इन्हन कठिया – गाइंठा बी ने
रानी अपन पीठा खा, खनली–कुटली
अथार लवली, पथार लवली
भाई खइलस, भतीज खइलस
उबरल–पबरल सिकहर टाँगि अइली
चेरिया के बाट देखली,ना आइल त ना आइल !
न संझा संझाइ, न बेरिया बिसरे, ना चेरिया घरे आवे!
रानी के खीसि बरे आ दीक बरे
चेरिया के पुतवा–बछवा के खूँटवा चीरि–चारि कइली
पिड़िया उसिनली, अपने पवली आ
चेरिया क बखरा सिकहरवा धइली
रखिया, धाई के घूर डालि अइली
गोड़–मूँड़ तानि के बज्जर केंवाड़ देइ, परि–हरि गइली।
संझा संझाइल, बेरि बिसरल, नीगिया क पटिया टूटल
हरे–हवा छोड़ल, कोंहारे आँवा काढ़ल
त चेरिया घरे लवटल,
आहि रे, देखु त मोर पूत घूरे लोटऽता–पोटऽता
माई–माई फेंकरऽता !
देखऽ बाबा, मोर मोआरिनि त असल नट्टिन
घोड़ा–घोड़ी आइत त धांग–धूंग घालित
सियार–माकुर आइत त चीरि–फारि घालित
आहि रे माई, तब का करितीं ?
डहकि–डहकि रोवेली, दुधवा पियावेली

'रानी हो रानी, तनी केवड़िया खोलऽ !'
कइसे केंवाड़ खोली, टेरि–फेरि चलि आवे
काँख मोर पुतवा, माथे मोर ओड़वा
पुतवा क नाँव सुनि, रानी अवाक
सोहरि के गोड़े गिरि परली
चेरिया, रे चेरिया, कवन तें नेम कइले
कवन रे बरत कइले
तोर त पुतवा – आ बछवा के खुँटवा चीरि–चारि कइनी
पिड़िया उसिननी, अपनेपसनी आ तोर बखरा सिकहरवा प ध दिहनी
रखिया, धइया, घूरे डारि अइनी
गोड़ मूड़ तानि केंवाड़ देइ परि–हरि गइनी।
आरे, काहें रे, तोर जीयछ भइल
काहें हमार मराछ भइल
चेरिया कहलस, तूँ राजा के रानी
पान–फूल काढ़े गइलू, मुँ जुठियवलू
हम त चेरी–चापर, गोबरो–गोंइठा के गइनी
तबो कहनी सुननी। पानी के गइनी तबो सुननी
कहनी सुनि के दाना खइनी, नाहीं त उपासे रहनी
हरतो शोक न परतो सोक, ना भइया ना बहिनी क सोक
शोक परो त घूरा भराव, पूत परसु कोरा !
कहे वाला, सुने वाला के पूजो आस
बैरी क होखे सत्यानास !!"

अइसहीं कतने लोककथा रानी आ चेरि क बाड़ी सन। सत–असत के लड़ाई बा। इरिखा बा, डाह बा, छल बा, परपंच बा। चेरि धोखा से रानी बन जा तिया आ रानी मजबूर चेरि (दाई)। सवाल जबाब आ नाटकीय संवाद का जरिये सुनवइया का भीतर कुतूहल बनल रहे, एकर खयाल कहनिहार के बराबर रहऽता। रानी के सोझबकई के फायदा, चल्हाक लउँड़ी उठइबे करेली स। छल प्रपंच से ऊ रानी क जगह हथिया लेली सन। दाई वनल 'रानी' संतोष खातिर काठ क पुतरी से आपन बिथा – दुख कहतिया –
– 'ए, काठे क पुतरी !' – 'का, राजा क धियरी ?'
–आरे, 'चेरिया क बेटी राज करे आ तूँ गोबरपथनी!'
– जाए द, 'सबुर धरऽ ए रानी, बाउर दिन जाई आ सुदिन आई त फेर तहरे राज तोहरे पाट होई!'

पुरान कथा–साहित्य के खोज में, हमहन के 'लोककथा' के थीम, मरम, मोटिव, उद्देश्य आ रोच. कता के नीक से समझे–बूझे खातिर ओह काल के शिक्षा–दीक्षा आ ज्ञान–अनुभव पावे का तौर–तरीका के समझल जरूरी बा। वेद, पुरान, उपनिषद, रमायन, महाभारत, पंचतंत्र, कथा–सरित्सागर, जातक–कथा, आदि कहानियन के पढ़ला–जनला का बाद साफ हो जाई कि ओम्मे से कतने कहानी सुनि–सुना के 'लोक' में प्रचलित लोककथा में शामिल हो गइली सन। सुने–सुनावे में ऊ गहिराई, व्यापकता आ रचाव–कसाव भलहीं बदल गइल होखे बाकि अपना मनोवैज्ञानिक प्रभाव आ असरदार कथानक का कारन इन्हन क लोकप्रियता बढ़ते गइल। अलिफ लैला, बैतालपचीसी, सिंहासन बतीसी आदि कहानियन के रहस्य, रोमांच आ चमत्कारी तिलस्मी रूप में मनुष्य आ ओकरा समूचा परिवेश के अब–गजब बिस्मयकारी रूप देखे के मिलेला।

लोककथा के कहानी क तत्त्व आ मूल्यांकन का कसौटी पर ना देखि के, ओकर सहजता, रोचकता, प्रवाह, रसात्मकता आ 'मोटिव' का अधार पर देखे के

परी। इहो देखे के परी कि ऊ काहे अतना लोकप्रिय आ जन–मनरंजनकारी भइली सन। ई साँच बा कि एक कहानियन से जेयादा एके कहे–सुनावे वाला के भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण रहे। कहनिहार क शैली, हाव–भाव–भंगिमा आ भाषा के सहजता त रहबे करे गद्य–पद्य में समान भाव से पूरा तन्मयता से सुनावे के अंदाजो रहे, जवन सुनेवालन के जिज्ञासा, कुतूहल आ तन्मयता के बढ़ा देव। कहवइया कथा कहत–कहत अगर कवनो कारन से एको मिनट ठहरि जाव त सुनवइया का मुँह हठात निकले, 'फेरु का भइल ?' आ ओकर बेचैनी बढ़ जाव। लोगन के उत्सुकता से, कहनिहार के टोकल–उटकेरल 'कहानी' के ताकत के प्रगट करे खातिर काफी बा। अपना 'कथ', 'मोटिव' रूप–शिल्प का आधार पर लोककथा जवना रूप में सुने–सुनावे के मिलेली स उन्हनी के कई खाना में बाँटल जा सकेला –

1. देबी–देवता भा अलौकिक दैवी शक्ति से संपन्न लोग से संबंधित आस्थापरक कहानी जवना में दैवी शक्ति परोख भा प्रत्यक्ष दीन–दुखी, ईमानदार सीधा–सच्चा लोगन क सहायता करेली स।
2. राजा–रानी, राजकुमार–राजकुमारी, राक्षस भा अमानवी वृत्ति वाला जादूगर–जादूगरनी, साधू–महात्मा, रानी–चेरि वाली लोक कहानी
3. व्रत–त्यौहार, परब–'उत्सव आ पूजा–पाठ से संबंधित जीवन–दर्शन आ लोकविश्वास के बढ़ावे वाली कहानी
4. बीरन, लोकबीरन के असाधारण वीरता, साहस आ पराक्रम के कथा
5. प्रेमाख्यान भा प्रेमकथा वाली लोककथा
6. नीतिपरक, शिक्षाप्रद आ उपदेश से भरल कहानी
7. पशु–पक्षी, पहाड़, फेंड़–रूख आ सर्प, नाग आदि से जुड़ल कहानी जवन संकटग्रस्त आदमी के सहायता क के ओकरा समस्या समाधान का साथ, सुख–समृद्धि देलें।
8. बूझे–बुझावे भा बुझउवल का मेल से बनल हास्य–विनोद से भरल कहानी
9. समाजिक, पारिवारिक विषमता आ व्यवस्था के विषमता के चित्रित करे भा दरसावे वाली कहानी जवना में, लकड़हारा, बुनकर, चरवाह, नाऊ, धोबी, चोर–साहु, दरजी मलाह आदि लोगन के इमानदारी–बेइमानी, गरीबी, सचाई आ रहन–चाल के अच्छाई–बुराई देखावे आ न्याय खातिर ओकरा संघर्ष आ लक्ष पवला क वर्णन बा। पारिवारिक कहानियन में महतारी–बाप, पति–पत्नी, ननद–भउजाई, भाई–बहिन, नोकर चाकर, दाई लउँड़ी के आपुसी संबधन में, मित्रता, वफादारी, विश्वासघात, अच्छाई–बुराई, नेकी बदी के चित्रण भइल बा।

लोकमानस आ लोकवार्ता में दैबी बिभूतियन के मानवीकरण क दिहल गइल आ के ओकरा में समस्त मानवी राग–द्वेष, खुशी आ खीस भर दिहल गइल। एही तरह से दान–पुन्न, धरम–करम, सगुन– अनसगुन, मंगल–अमंगल, शुभ–अशुभ के विचारो पैदा भइल। ई सब लोक–कथा में कब आके समा गइल, ई खोज बहुत कठिन बा। लोकमानस में 'नाग' के देवता मान के, पूजा कइला के विश्वास एसे जमि गइल कि ऊ जीवन ले सकेला त जीवन देइयो सकेला। नागरूप में स्थित दैबी शक्ति, अलौकिक आ रहस्यमयी करेला आ चाहे त धन–वैभव–संपदा दे सकेला। बा ऊ कवनो दीन–दुखी, गरीब आ सतावल लोग के सहायता नागदेवता का बारे में एगो लोककथा हमहूँ अपना ईया से सुनले रहलीं, ओके रउवों सुनीं –

''कवनो सोझबक गरीब किसान रहे। गाँव के बहुत लोग ओकरा गरीबी आ भोलापन क उपहास करे। परिवार के दुर्दशा, गरीबी आ उपहास से दुखी किसान के लड़िका कमाए–खाए का चिन्ता में आपन घर छोड़ि गाँव से बहरिया गइल। आगा घनघोर जंगल रहे। डेराते–डेरात ऊ जंगल में लीखि पकड़ले चलल जात रहे। भूखि–पियास, थकान से चूर, जंगली जानवरन का भय से डेराइल, एगो फेंड़ पर चढ़ि के पानी देखे आ सुस्ताये लागल। अन्हार भइल आवत रहे। जंगली जानवर के डर अलगा। ओकरा थोड़ी देर खातिर झपकी आ गइल। कुछ देर बाद ओकरा एगो मनमोहे वाला संगीत सुनाइल। देखत का बा कि चारू ओर एगो अजीबे किसिम के अँजोर फइल रहल बा, फेरु सुगंधित धुआँ उठे लागल, ओही में से एगो सुन्दर मुकुटधारी जवान प्रगट हो गइल। ओकरा चारू ओर से हँसत–खिलखिलात सुघर–सुघर मेहरारू आ गइली स। सोना क गहना से सजल धजल, सोना का थरिया में खाए–पिये क समान, फल–फूल लि. हले। एगो औरत सोना का कलसा में पानी आ सोना क जड़ाऊ गिलास लेले आ गइल। कुछ सजल–धजल औरत नाचे लगली सन आ मुकुटधारी जलपान करे लागल। गरीब किसान का लइका के अचंभा का मारे घिग्घी बन्हा गइल रहे। एह पहर बीतते एगो झम के आवाज भइल आ सामने लउकत मुकुट वाला राजकुमार आ सजल–धजल नाचत औरत सब गायब हो गइल। लड़िका आपन आँखि मलत ओह दृश्य के देखे के उतजोग कइलस, सामने हरियर हरियर दूबि वाला मैदान आ ओही से सटल, साफ जल वाला पोखरा लउके लागल। पियासे मुवत लड़िका नीचे उतरि के पानी खातिर ज्यों ही आगा बढ़े के कइलस कि फन कढ़ले, फुफकारत एगो करिया नाग सोझा खड़ा रहे। किसान के लइका डरनी काठ हो गइल फेरु कुछ सोचि के हाथ जोड़ि चिरउरी करत बोलल, 'हे नाग देवता, हम बहुत पियासल बानी। राउर आज्ञा आ मरजी होइत त हम पोखरा से पानी पी लेतीं !' नाग तुरन्त ओही मुकुटधारी का रुप में बदलि गइल आ खुश होके कहलस, "जा, हम तोहरा सूझबूझ आ नेकनीयत से खुश बानी, तूँ पानी पी लऽ !" लइका डेराते–पानी का लगे गइल। दू चिरुआ पियते ओकर कूल्हि भूख–पियास, थकान छू मंतर हो गइल आ ऊ मुकुटधारियो अंतर्ध्यान हो गइल। लइका पीछे मुड़ि के देखलस त पोखरो गायब। ऊ धीरे–धीरे रस्ता पर आगा बढ़ल त राह में सोना के एगो कलसा लउकल। ऊ अनदेख क के आगा बढ़ल त एगो सजल–धजल थोड़ा लउकत ऊ ओहू के ना पकड़लस आ आगा बढ़ि गइल। फेरु ऊहे परिचित मुकुटधारी प्रगट हो गइल आ कहलस, 'हम तोहरा ईमानदारी आ दयानत से खुस हो गइनी, हमसे बर माँगि लऽ !' सोझिया लइका हाथ जोरि के बोलल, "अगर रउवा हमरा पर सचहूँ खुस बानी त हमके एह लाएक बना दीं कि हम नीक से कमा–खा सकीं, बूढ़ माई–बाप के सेवा क सकीं आ हमार केहू उपहास ना करे।" मुकुटधारी ओके एगो अँगूठी देत कहलस, "एके पहिन लऽ। ई जबले तोहरा अँगुरी में रही तोहरा कवनो चीज के कमी ना होई बाकि अगर नाजायज काम करबऽ त इहो गायब हो जाई। किसान क लइका अँगूठी पहिनि के घरे लवटि आइल।"

एही तरे आजी, बाबा, नाना, नानी का कहानियन में नाग-जच्छ, राक्षस, भूत-प्रेत, साधू, देव, सिद्ध सब बा। इहाँ तक कि जिया-जंतु आदमी क बोली बोलेला आ मनुष्य क सुख-दुख बूझेला। ●●●

क्रमशः अगिला अंक में

कहानी

आखिरी बेरा के सँघाती

❑ शम्भुनाथ उपाध्याय

बुद्धू छव में पढ़त रहले तबे उनकर बाबू मरि गइले। दू जाना बूढ़ चाचा लो रहे। एगो उनका ले बड़ भाई रहले जवन प्राइमरी स्कूल में पढ़ावत रहले। बुद्धू पढ़े में बाड़ा तेज रहले। उनका ले अधिका नंबर उनका क्लास में केहू के ना आवे। मास्टर लोग उनका से बड़ा खुश रहे। नव ले जात–जात उनकर देहि सरिहरा गल। ऊ बहुत बरियार हो गइले। देही का जोम में ऊ लगले झगड़ा–झंझट करे। अबर के पक्ष करसु आ अनेरही के झगड़ा कीनि लेसु। केहू तरे एगारह ले पढ़ले।

ऊ जब एगारह में पढ़त रहले तलही उनकर चाचा उनकर बियाह क दिहले। ऊ कवनो नोकरी चाकरी त करत ना रहले आ ओहू पर रोज ओरहने आइल रहे। तनिकियो बात में उनकर चाचा लो एतना हल्ला करे कि मोहल्ला बटुरा जाइ, जइसे कबनो बहुत बड़ अपराध कइले होखसु। चाचा लो बुद्धू से कहे, "तूँ आपन इंतजाम करऽ।" ऊ चुप मउनी बाबा बनि जासु बाकिर ऊ लो माने ना आ पूछे लागे "का इंतजाम कइलऽ।" सुनत–सुनत ऊ अँउजा गइले आ एक दिन अपना संगी दीनबन्धु के बाबू जी के संगे कलकत्ता चलि गइले। दीनबंधु के बाबू जी सुदर्शन बुद्धू के एगो सेठ किहाँ दरबानी में लगा दिहले। उनकर मालिक सेठ के मेहरारू रहे। ओकरे संगे ऊ जहाँ जाइ, जाए के परे। रुपया–पइसा दरबाने के पाले रहे। मालिक के हुकुम पर ओकर सामान कीने के परे। एक दिन सेठानी बुद्धू के संगे ले के बाड़ा बाजार गइली। ऊ ओइजा के सड़क आ मकान देखि के चिहाए लगले आ लगले सोचे कि, "ए भाई ए आदिमिन के लगे केतना रुपया बा। अइसन मकान त हमरी गाँव कावर एकहू नइखे। हमनी किहाँ आदिमी एतना खटेला, दिन–रात लागल रहेला, तबो ना मकान बनि पावेला। ना नीमन भोजन मिलेला। ई एतना रुपया कहाँ से पावऽ तारे स ?" हमने के खून चूसि के बुझाता कि ई रुपया बटोरले बाड़न स। इहे सोचत रहले तले देखले कि सड़किया पर बहुत भीखमंगो बाड़े स। जँघिया आ गंजी पहिरले–जीयति लासि नियर जँहे सेठानी के गाड़ी रुके, खड़ा होके हाथ फइलावे लाग तारे स। आ ई सेठनिया अइसन कठकरेजी बा कि एको हाली हमरा से कहति नइखे कि इन्हनी के कुछू दे दऽ।

बुद्धू अँऊजा गइले आ लौटानी में एगो भिखारी के अपना पइसा में से एगो रुपया दे दिहले लवटि के अइला पर सेठनिया उनका से कहलसि "तुमसे नौकरी नहीं हो पायेगी।" बुद्धू बुझले ना आ कहले "क्यों नहीं होगी ?" सेठनिया कहलसि "तुमने नौकर होकर भिखारी को एक रुपया दे दिया जबकि मैंने मालिक होकर कुछ नहीं दिया। तुम हमसे बड़े आदमी हो।" बुद्धू बड़ा स्वाभिमानी रहले कहले कि – "इसमें शक नहीं है बड़ा आदमी त हइये हईं। नौकरी कइला से का ?" सेठानी के एगो बड़ लइका उमा रहे ऊ कुल सुनत रहे। बुद्धू के बोलवलसि आ कहलसि कि "खजान्ची से जाकर हिसाब ले लो और चले जाओ।" ऊ आपन हिसाब लिहले आ चलि गइले।

दू बरिस ले हेने–होने बउड़िअइला के बाद बुद्धू नगरपालिका में प्राइमरी स्कूल में मास्टर हो

गइले। साले भरि के बाद उनकर भइया मरि गइले। घुमक्कड़ बुद्धू के कपार पर सोरह आदिमी के बोझ एकाएक परि गइल। दू जाना बूढ़ चाचा, भइया के एगो लइका आ तीन गो लइकी, एकरा अलावे दू गो छोट भाई, महतारी, मेहरारू आ एगो उनकर छव महीना के लइकी। ऊ घबड़इले ना। एह चुनौती के स्वीकार कइले। उनकर तनखाह साठी रुपया महीना रहे ऊ अठारह घंटा खटसु तीन स रुपिया के ट्यूसन करसु। तीनू लइकन के गाँवे से ले आके अपना किहाँ रखले आ पढ़ावे लगले। दूसरका भइयवा रमेशर नव में रहे। भतीजवा दीनानाथ आठ में आ छोटका भइयवा छोटू पाँच में रहलेस। दूनो चाचा लो मरि गइल, दूगो भतीजियन के शादियो हो गइल, रमेशर बड़का साहेब रहले भतीजवा हाईस्कूल में प्रींसपल भइल आ छोटुआ सरकारी नोकरी में हो गइल। भाई–भतीजन के बियाह हो गइल। बियाह भइला आ नोकरी लगला का थोरही दिन बाद भतीजवा आ दोसरका भइयवा अलगा भइलन स। बुद्धू के करेजा फाटि गइल मन मसोसि के रहि गइल।

एक दिन बुद्धू के दुआर से हम गुजरत रहनी। बुद्धू बड़ा उदास बइठल रहले। हम उनका ओर बढ़ि गइलीं। देखते बुद्धू उठिके हाथ जोड़ि दिहलनि आ बइठे के कहलनि । एने–ओने के कुछ बाति भइलि। चले लगलीं त संगे चलि–दिहले। लौटे के बेरि गहिर साँस छोड़त बुद्धू हमरा से कहले कि ए भाई जी, हम सुनले रहलीं कि 'केहू–केहू के नइखे' बाकिर ई बात हमरा बुझात ना रहे, अब हमरा चार आना बुझाता कि 'केहू–केहू के नइखे'। बुद्धू का एगो कुँवार लइकी के आ तीन गो लइका बाड़न स। तीनों कमा तारे से। बुद्धू के छोटका भइयवा छोटुआ हमरा से भेंटा गइल आ कुछ पारिवारिक बातचीत भईल। हमरा से कहलसि कि "ए काका हम बतीस बरिस से नोकरी करतानी अपना खेत में के एकहू दाना ना लेले बानी।" हम कहलीं, "बतीस बरिस में एगहू धे लो त नइखऽ देले, एह घरी दाना खोजतारऽ, आ जवना दाना से बलुक बुद्धू का खूनसे तू नोकरी कर तार ओकर का होई ? बुद्धू फाटल कुर्त्ता–जूता आ धोती पहिरि के आ आपन खून जरा के तोहके एह लायक बनवले; पहिले ओकर त भरपाई करऽ, फेरु आपन दाना खोजिहऽ।" हमार बात सुनते छोटुआ जलि–भुनि गइल। अँगराइ के चलि दिहलसि। केहु तरे छोटुवा के ई बाति बुद्धू किहाँ ले पहुँचि गइल। ई बात सुनते उनका बान नियर लागल। उनका दिमाग में ई कबो ना रहे कि छोटुवा ईहो सोची। ऊ ओकरा के अपना लइका नियर पलले रहले। उनका काठया लागि गइल। लगले सोचे कि ए दादा अब का होई। ई त तीनू भइयवा अफदरा छोड़ि दिहलेस न। सोचे लगले कि सचहूँ केहू केहू के नइखे। बहुत दिन पहिले ई बात उनुका से केहू कहले रहे। उनका ई बाति बुझाइल ना। आजु बुझाइ गइल बा बलुक बारह आना बुझाइ गइल बा। सोचे लगले हे भगवान अबहियो चारि आना बूझल बाकी बा। अब का होई। एके समझे खातिर कवन दिन देखे के परी।

बुद्धू आजु संझिये से बड़ा बेचैन बाड़े। सूते के कोसिस करतारे, निनिये नइखे आवत। आँखि लगते अचके में बुझाये लागता कि छोटुवा 'भइया–भइया' कहि के चिल्ला रहल बा। उठि के बइठि जा तारे। फेरू सूततारे आ फेरू उठि के बइठि जा तारे। बगल में बुढिया कराहत परलि बि या। रहि रहि करवट बदलतिया। बुद्धू के दशा ओकरा से देखि नइखे जात। करो त का करो। ई बेचैनी उनका सबेरही से बा।

बेमार बुढ़िया से कुछु बतावत नइखन बाकिर ओकरा कुछु कुछु बुझा रहल बा। काल्हु पेंशन निकालि के ले अइले। बनियवा तगादा पर आ गइल। थोरे ओकरा के दे दिहले। ओकरा बाद से बेचैन बाड़े। बुढ़िया सोचि–सोचि के आँखि मुंदले करवट बदले। कबो कबो कनखी से उनके देखियो लेव।

बुद्धू आज सबेरहीं आँखि खुलते सोचे लगुअन। बनियवा के कुछु दीहल जरूरिये रहल हा। नवका हितई के नेवता आइल बा, बुढ़िया ढेरे बेमार बे, डाक्टर के देखावही के परी। हमरो मन ढीले बा। पतोहिया नइहर जाये खातिर उठान बिठान लखले बे। ओकर विदाई करहीं के परी। महीना भर के खर्च अलगा बा। आइलो गइल देखहीं के परी। हे भगवान कइसे चली। एही बीचे सुखुवा आ गइल। ऊ बुद्धू के सबसे छोट भाई। छोटुवा किहाँ चपरासी बा। पिछुअरिये ओकर घर बा। घरे पहुँचते दुआर पर हाजिर हो गउवे।

'का ए सुखू, छोटुवा कइसे बा ?' देखते बुद्धू का मुँह से निकलि गइल। "ए काका,, छोटू चाचा बड़ा अफादरा फँसि गइल बाड़े। समय पर पइसा ना जूटी त बुझाता कि ईज्जति नीलाम हो जाई। ढेर पइसा के काम बा। कुछु जुटियो गइल बा, बाकिर.... कहि के सुखवा चुप हो गइल। बुद्धू का बूझे में देरी ना लागल। बुद्धू तब से कई दुआरे जा के लवटि आइल बाड़े। हारि–पाछि के आपन खेत रेहन धरे के सोच तारे। लइका ई सुनि के आगि बबूला हो गइले स। दुइ बेरा से खइले नइखन। कइसे बुद्धू का नीनि आओ।"

आखिर बुढ़िया से रहाइल ना। जे ही बुद्धू उठि के बइठले बुढ़ियो कराहत उठे के कोसिस करे लागलि। सहारा देके बुद्धू उठा दिहले। 'काहो' पूछले बुद्धू।

'काँहे बेचैन बाड़ऽ ? आखिर कब बतइब कहत बुढ़िया उनुकर लोर पोंछि दिहलसि।'

'का तूं कुछुओ नइखू जानत ?' बुद्धू पूछले। 'हम कूल्हि जानतानी बाकिर तूँ त हमसे कुछऊ नानू कहल हऽ। बुढ़िया बोललि।'

बुद्धू कहले 'का करीं कुछ बुझाते नइखे, सोचतानी तूँ आपन गहनवा दे दीतू त काम बनि जाइत। फेरू तोहरा के बनवा दीतीं।'

'हमार गहना तूँही बाड़ऽ' कहत बुढ़िया तकिया का नीचे से पोटली निकालि के उनका ओरि बढ़ा दिहली आ कहली 'तूं हमरा के बुद्धुए नू जाने लऽ, ई त हम साँझिये सोचि लिहुँईं। तोहार छोटका भाई अफदरा से निकलि जाई त तोहार उमिरि बढ़ि जाई।' बूढ़ा–बूढ़ी एगो दोसरा के देखि के मुस्किया दिहले आ सटि के जइसे लेटल लोग चुहचुहिया बोले लागलि। सुनते बुढ़िया कहलसि, 'बिहान हो गइल नू, दुई हजार ईहो चोरिकवा बा ले लऽ। बुद्धू का आँखि से लोर टपकि गइल। पोटली आ रुपया लेके बिछौना से उठि परले।' 'आपनो धियान रखिहऽ' कहि के बुढ़िया करवट बदलि लिहलसि। आ भुनभुनात कहलसि, 'जिनिगी भरि बुद्धुवे रहि गइले। आपन दुखो तकलीफ केहू से बतावल ना चाहसु।' जिनिगी के आखिरी पड़ाव में, बुद्धू, अपना सबसे निगिचा, सबसे करीब बुढ़िया के पवले। उनका अतने बुझाइल कि उनका भीतर के सगरी बेचैनी आ ऊहापोह के पता साइत बुढ़िये के बा।

●●●

रम्य व्यंग्य रचना

रउरा अइलीं

❑ राजगुप्त

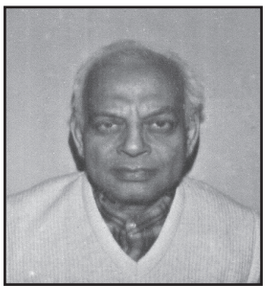

राउर आइल बड़ा नीक लागल रहे ए सरकार। रउरा, हमरी शहरिया, बेरि–बेरि अइतीं। मेड़–डराड़ि, खेत–खरिहान, कानो–पानी, काँट–कूस सज्जी लांघत रउरा हमरी शहर में आइल रहलीं। जानी कि का हालि बेयान करी। सांच पूछी त बड़ा नीक लागल।

राउर आइल सुनि सूतल पुलिस जाग गइल रहलें। हफ्ता दिन पहिलहीं घर–घर के खन तलासी लिआइल रहे। होटल–सोटल पर त कई तोर राति के अन्हरिया में छापा पड़ल रहे। शहर के कोना–अँतरा सज्जी छना गइल रहे। टीसन, प्लेटफार्म, गली–कूचा सगरी सीनेमा हाल चहुँओरि चवगरा क के आँखि के मुरचा छोड़वले रहे लोग। वर्दी के धमक देखते बनत रहे।

राउर एतना सुरक्षा देखि के गइल–गुजरल आदमी आपन अँगुरी अपना दाँत से कटले रहले। राजा महाराजा अस सुरक्षा देखि अबरन के आँखि जुड़ा गइल रहे। बाप रे बाप ! एगो नश्वर शरीर खातिर हेतना घेराबन्दी। रउरा आइल रहलीं त केतना गुलजार भइल रहे। जाने कहाँ–कहाँ के पुलिसन के चरन हमरी गाँव में पड़ल रहे। हमार गाँव पवित्तर भइल रहे। एक से एक हस्ती, केहू के कम काहें के कहे जाई। घीउ जो अगवड़े मिल जाउ त दही काहे के महे जाई? केतनो बखान करीं कुल्हि थोर बुझाता। जहवाँ पिआज के पकौड़ी खइले रहलीं आ जवना तपेसर के दोकान के टुटही बेंच पर बइठि के दूध के चाय पियले रहलीं, साँच कहत बानी, ओह बेचारू के भागि जागि गइल। पलानी गुलजार हो गइल। नेता पकौड़ी आ नेता चाय के डंका बाजि गइल। जानी सरकार कि साक्षात् लक्ष्मी जी पलानी फारि बरिसे लगली। जे ना जानत रहे उहो अखबार में तपेसर के फोटो रउरा संग देखि के चिहा गइल। राउर चरन पड़ते एतना नाव कमा लीहले कि एह पारी के परधानी जीतल उनका बाएँ हाथ के खेल बा।

अब का हालि बेयान करी सरकार। जेह पड़े रउरा आवे के रहे ओह सड़क पर बरिसन के केहू के ध ोयाने ना जात रहे। गड़ही सड़क ओकर नावे पड़ि गइल रहे। रेक्सा से अस्पताल जात खा कइगो मेहरारुन के गरभ गिर गइल रहे। अब रउरे सोचीं, केतना गचकी वाली सड़क रहे। ओकरा के बनावे खातिर केतना अनशन–हड़ताल ठनाइल बाकिर सुनवाई ना भइल। केतना नेता ओह सड़क के बनवावे के कसम खइले। जेकरा सन्ती चुनावों जीति गइले तब्बो ओह सड़क के भागि ना जागल। अफसरन से कहाइल त बजट ना रहला के बहाना बना दीहले। बाकिर कहाउति ह कि सात मुदइयों के भागि जागेला। रउरा अइली आ रातों रात ऊ सड़क बनि के तेयार हो गइल। सबेरे जे आँखि मलत उठल, ऊ कवनो जिन्न के करिश्मा जानि के सभ चुपा गइल। राउर चरन पड़ते गड़ही–सड़क अहिल्या अस तरि गइल।

कमेसर टेन्ट वाला के केतना दिन से काम धन्धा बन्न रहे। बेचारू घरे बइठि के अपना भागि पर

झंखत रहले। जइसे लोहा में मुरचा लागेला, ओही गने बांस–बली के दँवरे पर धइले–धइले ओमें देंवका लागत रहे। कहल जाला घोड़ा, विद्या आ पान ना फेरल आउ त खराब हो जाले। जानी कि जइसे शहर सूति गइल रहल ह। कमेसर अपना आदमियन के बइठा के कहिया तकले खिअइते। रउरा आके कमेसर के भागि जगा दिहलीं। बेचारू के बाँस–बल्ली, कुर्सी–कनात, टेन्ट–तम्बू के लाखन के ठेका मिल गइल। प्रेस वालन के भागि जनि पूछीं। बाबू लोग खूब चानी काटल ह। मोड़–मोड़ पर नेता जी के संग फोटो वाला बैनर बनवा के जवन टँगवा दिहले रहल ह लोग कि छोटका नेता चमकि उठले। रउरा साथे आपन नाँव जोड़ला के मोका संजोग जटित कब ना। एही पारी सभके भागि चमक उठल ह। बैनर आ पोस्टर में फोटो त रहबे कइल, अखबारो में विज्ञापन दे के खूब फोटो छपवावल ह लोग। सउसे शहर लाल पीयर नारंगी हरियर में रंगा गइल रहे। सगरो तिरंगा क भरमार रहे।

जाने केतना मकानन के रूख मरा गइल रहे। हे धरती पुत्र रउरा के देखे खातिर लोग चिरई अस फेड़ पर चढ़ि के बइठल रहले। पारस के पलानी त भसे से बांचि गइल ना त भगदड़ मचि गइल रहित। केतना सुन्नर उ दिन लागल कि बिजुली एक सौ बीस घन्टा में एकहू बेरि ना कटल। शहर के सज्जी होटल के एकएगो कमरा तीन चारि दिन तकले ठसाठस भरल रहली स। जहवां एक किलो चाउर रिन्हात रहल ओइजा बेरि बेरि माड़ पसवे के परल रहे। अब सोची केतना चाउर रिन्हाइल होई। केतना तरकारी छँवकाइल होई ? चाय पान आ गुटका के दोकानन के त माल त घन्टे–घन्टे में चट हो गइल रहे। समोसा पकौड़ी अइसन उधियाइल कि ओह गने बुढ़िया आन्ही में बगइचा के पतइयों ना उड़िआइल होखी।

केहू अंदाज ना लगवले रहे कि एतना भीड़ि होखी। बस ट्रेक्टर, जीप–कार के त हालिये जनि पूछीं। स्कूटर–मोटर साइकिल त जइसे घलुआ हो गइली स। ई कुल्हि सज्जी मिल के केतना सवारी ढोवली स, शहर में केने–केने अमइली स कि पत्रकारो लोग एकर आँकड़ा ना लगावले। देश के आबादी के आंकड़ा बतावे वाला लोगन के ओह दिन के भीड़ि देखि अकिलिए हेरा गइल। गाड़ी के छत पर भीड़ि देखि के सभकर आँखि चुन्हरिया गइल। बे किराया भाड़ा के रेल बस में फ्री पास होखे त केकर मनफेरवट करे के मन ना करी ? अइसने में त तनि घूमे–फिरे के मन करेला। अइसन सुतार बेरि–बेरि ना आवेला। बहुत लोग रउवे बहाने आके सनीमा हाल में घुसि गइल। जानी कि टिकट के मारा–पिटी। हाउस–फुल के रेकार्ड हो गइल। रउरा आई, बेरि–बेरि आई ! हमरी गाँवे आई। सभकर जिआ जुड़ाई। हर हाथ के काम आ टुटपुंजियनो के दाम मिली।

दोहरउवा रउवा के बोलावे के बड़ी तेयारी होता। एह पारी रउरा आइब त स्वर्ण–मुकुट भेंट कइल जाई। रउरा भगवान ना हई त कवनो बाति ना, मु कु के तेयारी हो गइल बा। भले रउरा राणा प्रताप ना हईं, कवनो बाति ना, रउरा के हमनी की ओरि से चानी के तलवार भेंट कइल जाई। एकावन किलो के माला के आर्डर पहिलहीं से दिहल गइल बा। रतन जड़ित कुर्सी देखब त राउर हिया जुड़ा जाई, अइसन मंच के तेयारी कइल गइल बा। जयमाल के स्टेजो लजा जाई। जवन रउरा हमनी के होसिला बढ़ा गइली कि दोहरउवा राउर तकाई बा। आइब जरूर से जरूर सरकार हमरी गाँवे दोहरउवा जरूर आइब। ●●●

लघु कथा

'सार्वजनिक' के समानता

❑ ऋचा

मुहल्ला के सड़क तिहरउवा बने जात रहे। पहिला बेर बनल त दक्खिन ओर से एक फुट क एगो नाली बनल रहे। सड़क उत्तर से दक्खिन ओर तनी खाल बनल। दोसरका बेर सड़क एसे बनल कि नारी गंदगी से लबालब रहे आ जाम का कारन लोगन का घर में बरसात क पानी ढुके लागे। तब सड़क एक फुट ऊॅच कइल गइल आ नाली गहिर। डूडा पत्थल क पटिया से बनावल ओह सड़क पर अपना अपना घर का सामने सब आपन अइसे अधिकार जतावे, जइसे ऊ सड़क ना होके ओ लोग के रजिस्ट्री जमीन होखे।

जइसन कि हर पुरान शहर का, हर पुरान मुहल्ला में सड़क पातरे आ कामचलाऊ होला, हमनियो के मुहल्ला के सड़क पातरे बाकि दस फुट चाकर रहे। जब आपन पइसा भा ताकत के घमंड देखावे के होखे त मुहल्ला के तीन–चार गो सेसर लोग, हारा–हूॅसी से, अपना घर का सोझा सड़क पर कार, मोटर साइकिल त खड़ा करबे करे, दोसरो का घर का अगल बगल खड़ा करे। अउर गिट्टी, बालू, छड़, ईंटा, कूड़ा, भूसा इहॉ तक कि गाय ले बान्ह देव। अबर लोग भा राह में आवे–जाए वाला लोग गुरमुसाइ के रहि जाव। आखिर बरियारा से के अझुरा बेसाही ?

पढ़ल–लिखल, समझदार आ पइसा कमाए वाला शहरी लोगन का बीच में अतना घमंड आ खुदगर्जी कि पूछीं मत। त तिसरका बेर सड़क बने के कारन सीवर–निर्माण रहे जवन दू बरिस से होत रहे आ अब जाके पूरो भइल त, गड़हा– आ ऊॅच खाल का नाते, बरसात में नरक झूठ हो गइल। सड़क तिहरउवा बने लागल। उखाड़ के दूनो ओर सरियावल पत्थल के पटिया हटे लागल आ सीमेन्ट के ईंटा वाला सड़क बने शुरू भ. इल। सेसर, बुधिमान, बलवान आ चल्हांक लोग अपना अपना दुआरी के आगा अपना इच्छा आ नीयत का अनुसार ऊॅच–खाल करावे, सीमेन्ट लगवावे, आ ठीकेदार से बतिया के, सड़क पातर–चाकर करावे के इंतजाम बान्ह लिहलस। माने ई कि सार्वजनिक सड़क, तिसरको बेरी, एक समान, एक नियर ना बनल। तिसरको बेर सड़क के बहुत कुछ सार्वजनिक से ब्यक्तिगत हो गइल। जइसे सरकारी पटिया ॲगना–सहन में गइली सन, सिमेन्ट–मसाला से दुआरी का सोझा चढ़ान–उतरान बनल। शरीफ, कमजोर आ अनबोलता का बोलित, कहाउत बनले बा कि ''सिधवा के मुॅह कुक्कुर चाटे।'' ●●●

शिवपूजन लाल विद्यार्थी के दू गो बरखा- गीत

[एक] धरती के हँसत सिंगार

रोपनी लागल धुआँधार हो, जिया हुलसे हमार।
धरती के हँसत सिंगार हो, जिया हुलसे हमार।।

रिमझिम–रिमझिम बरसे बदरिया
मेघा मारे रंग–पिचकरिया,
रसवा में भींजे साँवर बधरिया
खेतवा में लोटे बहार हो.... जिया हुलसे हमार।

मौसम ई कतना पियारा सुहावन,
अमरित लुटावत बा धरती पर सावन
रोपनिन के गीतन पर नाचेला तन–मन
चहकत बा सँउसे बधार हो..... जिया हुलसे हमार।

बन्हले कमरिया से कोस के अँचरिया
खोंटले ठेहुनवाँ तक लसरल चुनरिया
निहुरि–निहुरि धान रोपे गुजरिया
चुड़िया के बाजे सितार हो.... जिया हुलसे हमार।

छपर–छपर पनियाँ में भीजल सजनवाँ
गमछा पहिरले कबारत बीहनवाँ
मनवाँ में तयरेला लह–लह सपनवाँ
कब होई जाने सकार हो.... जिया हुसले हमार।

होत भिनसहरा ही जागेली गोरिया
सखियन के संग जाली खेतवा का ओरिया
आपुस में होला चुहलेवा–ठिठोरिया
खेतवा में कदई से प्यार हो.... जिया हुलसे हमार।

●●●

[दू] झूमत–गावत सावन आइल

मेघन के मिरदंग बजावत झूमत–गावत सावन आइल।
मौसम सरस सुहावन आइल।।
सोभत बा धरती के तन पर धानी चुनरी कतना सुन्दर
दूर–दूर ले हरियाली के उड़त अँचरवा लहरे फर–फर
सावन के रिमझिम फुहार में बाग कल्पना के हरियाइल।
मौसम सरस सुहावन आइल।।
धरा फाड़ि के दादुर चंचल कुंभकरन से नींद से जागल
टर–टर–टर के गीत राति के सन्नाटा के भेदे लागल
चातक के पी–पीं के रट से
विरहिन के जियरा अकुलाइल।
मौसम तरल सुहावन आइल।।
सूखल आहर–पोखर उमड़ल,
दुखिया नदियन के दिल बहुरल
खेतन में रोपन के, घर में कजरी के रसगर सुर गूँजल
लह–लह, चह–चह देखि बधरवा
'होरी' के मनवां हुलसाइल।
मौसम सजल सुहावन आइल।।
पात–पात के प्यास बुझावत,
कलियन–फूलन के नहवावत
तन के मन के तपन मिटावत,
धरती पर मोती बरसावत
सतरंगी परचम लहरावत फिर सावन मनभावन आइल।
मौसम विमल सुहावन आइल।।

●●●

सनेस

❑ डा0 हजारी लाल गुप्त
'हमराज'

हम जानत बाटीं, भले बचवा,
कि तुँ आदत से फिरु बाज न अइबा।।
चुपचाप लगाइके घात कबो,
हमरे पिठिया पे कटार चलइबा।।
बिसवास के आड़ में धोखा–धड़ी,
कहवाँ ले भला हमके अजमइबा।।
'हमराज' जो धीरज टूटि गइल,
नकसा में तुँ आपन दश न पइबा।।

कश्मीर करेजा हवै ललऊ,
देखबैं केतनी उत्पाति मचइबा।।
औ सेना हवैऽ केतनी तोहरे,
केतना ले कहाँ घुसपैठि करइबा।।
देसवा त इ खानि हऽ बीरन कऽ,
तुँ भाड़ा कै सेना कहाँ ले मंगइबा।।
हमराज के अइसन लागत बा,
टुकड़ा कै फिरू टुकड़ी करवइबा।।

ढाका कै ऊ मिरचा ललऊ,
रहि–रहि तोहरी आँखिया लगि जाला।।
कसमीर त हिन्द कै स्वर्ग हवै,
एगो एहू कै पीरि करेजे पिराला।।
फिरु फूल बिछाईं कहाँ ले तोहैं,
तोहरी ओरियाँ से त काँट बिछाला।।
'हमराज' जे दूध क जारल बा,
छँछवा फुकिये के ओहू से पियाला।।

कइसन कै चरित्र हवै तोहरा,
हम सोचीला कइसे तूँ जीयत बाटा।।
चलि अइला तूँ फारै मोरा अँचरा,
अपना फटला के न सीयत बाटा।।
एह देश में राम रहीम बसैं,
उनसे तूँ सनेह न सीखत बाटा।।

'हमराज' न तूँ अनजान हवा,
अब जानि के, माहुर पीयत बाटा।।

करगिल न हवै हलुवा ए लला,
नहिं द्रास हवै छेनवा कै मिठाई।।
शेरवा कै मुँहा ई बटालिक ना,
ललऊ पल एक में जइबा हेराई।।
हम नाहीं घमंड कै बाति करीं,
अँखिया खोलले, कुलि देई देखाई।।
'हमराज' पता न लगी तोहरा,
सचहूँ जो' उहाँ छिड़ि जाई लड़ाई।।

दुइ चारि मिसाइल धइ के लला,
हमसे एतना अधिरायल बाटा।।
हम दागबि तऽ कुछऊ न बची,
बचवा कहवाँ तूँ भुलायल बाटा।।
करगील आ बटालिक, द्रास में जो,
हलतै ललऊ तुँ हेराइल बाटा।।
'हमराज' तुँ अब चलि जइबा कहाँ ?
अबकी घरवै में हेरायल बाटा।।

रीति–रिवाज इहै चलि आवैले,
अइसन वेद, पुरान कहैला।।
धन–मेह सदा बरसै उहवाँ,
जहवाँ नेहिया कै बयार बहैला।।
अंगना में सनेह क फूल झरै,
जवना घर में सुख–शान्ति रहैला।।
'हमराज' कलह, झगरा कइले,
सच में सबकै सनमान ढहैला।।

●●●

चसकल मनवाँ

❑ जनार्दन प्रसाद द्विवेदी

मन आपन ई चसकल हवे, ना माने, कुछ लिखे,
चाहेला जे, लोगवा पढ़े, हँसे अउर खुश दिखे।

लिखे के त रोज रोज बा, कठिन काम छपवावल,
दुअरा दुअरा हाथ पसारल, एके गितवा गावल।

कबो कबो किरपालु केहू, मददगार बन जाला,
कुछ लोगवा ई देख देख भितरे भीतर मछियाला।

कुछ सज्जन अइसनको दानी, लम्बा चौड़ा हाँके,
जाईं जब उनका दुअरा त लागस बगले झाँके।

डींग हाँक के बड़का बनल, कुछ मनई के काम,
आपन नाम जपेले हरदम रोज सबेरे–शाम।

अब ज्यादा अपने खरचा से कविता–ग्रंथ छपाला,
तबो कुछ जने छाती पीटे, देख देख हरखाला।

लोकार्पन के दिन अइला पर भासन जम के होला,
सुन–सुन के ई कविता–भासन भाई लोग हँसेला।

व्यंग्य बान खूबे छूटेला फबती खूब कसाला,
कान काम ना करे बे अरथै, मुड़ी हिलावल जाला।

कविता के दुर्दिन आइल बा कवि के भाग थुराइल,
नइखे केहू कीने वाला, पइसा खूब बुकाइल।

छपल किताबन के ढेरी बा, बबुआ खूबे बाँटस,
लोग कबाड़ी का घर बेचे, कइसे ओके डाँटस।

नोकरी साथे आमद उड़सल, पेंशन पर बा जीअल,
चसकल मनवाँ छोड़त नइखे आदत कागज–सीअल।

●●●

एकांकी नाटक

तारनहार

❑ **सुरेश कांटक**

: पात्र :

तारनहार जी – सरकार जी

दउलतदार जी – बरखुरदार जी

चौकीदार जी – वफादार जी

होसयार जी – आम आदमी 1

आम आदमी 2 – आम आदमी 3

आम आदमी 4 – गायक जी

[दृश्य - एक]

[गायक आपन डफली बजा–बजा के एगो गीत गा–गा के लोगन के जुटावत बा आ गोल चक्कर में चारो ओर घूमत बा **]**

सदियन के मशक्कत के अतने त खुलासा बा

बस्ती में खामोशी बा, मरघट में तमाशा बा

[गीत खतम होते चार गो आम आदमी चारो कोना प बइठि के जोर जोर से रोवे शुरू करत बाड़न। उनुकर रोवाई अइसन करूण बा कि चारो ओर फहल जाता। ओही घरी सरकार जी, चौकीदार जी का संगे आवत बाड़न। सरकार जी के पोसाक बग–बग उजर बा। पगड़ियो लकदक सफेद बा। चौकीदार जी के पोसाक में लाल हरियर ऊजर केशरिया सभ रंग शामिल बा। **]**

सरकार जी : (आम आदमीन के रोवाई सुनि के खीसी भूत हो जात बाड़न। चेहरा तमतमा जाता, चौकीदार से कहत बाड़न।) "चौकीदार जी !"

चौकीदार जी : "जी, सरकार जी"

सरकार जी : "ई सभ का होता ! जेनही जात बानी, ओनही मरघट बनवले बाड़न आदमी ! हमरा ठीक नइखे लागत ई सब। पता लगाईं त, ई सभ काहे रोवत बाड़न स !"

चौकीदार जी : "जी, सरकार जी, जइसन हुकुम ! हम अबहिये जात बानी। पता लगा के आवत बानी।" (जात बाड़न। सरकार जी कुछ सोचत–समुझत टहरत बाड़न।)

चौकीदार जी : (पहिलका आम आदमी भीरी जाके) "का रे ! ई सभ का होता ? तोहनी के त एह देश के नरक बना के छोड़ देले बाड़ऽ। सउँसे दुनिया में कतना बदनामी होता हमनी के। का बात बा ? काहें रोवत बाड़े ?"

आम आदमी 1: "हमार बाबू किटाणु नाशक जहर पी के मरि गइलें।" (खूब जोर से रोवत बा।)

चौकीदार जी : "किटाणुनाशक जहर पी के ?"

आम आदमी 1: "हँ"

चौकीदार जी : "ई काहें ?"

आम आदमी 1: "कपार प करजा लदाइल रहे। महाजन रोज रोज बेइज्जत करत रहन स। देबे के साँवस ना रहे। लाजे जहर जी गइलें।"

चौकीदार जी : "जब चुकावे के पाराकाबू ना रहे, त करज काहें लिहलन ?"

आम आदमी 1: "खेती खातिर ! भूखे मुए के ठेकान लागल रहे।" (फेर, रावत बा।)

चौकीदार जी : "जाये दे, ठीक भइल। सभ दुखन से मुक्ति पा गइलें। ठीके बा, रोउ, खूब रोबू। तेहूँ रोवते–रोवत मरि जो। आबादी जवने कुछ कम होई। विदेशी कंपनिया बढ़िया दवाई बनावत बाड़ी स। जब आदमी मरि सकत बा, त किटाणु काहें ना मरिहें स।"

(दोसरका आम–आदमी भीरी जात बाड़न। ओकरो से पूछत बाड़न।)

चौकीदार जी : "तें रे ! ते काहें जीयल मुस्किल कइले बाड़े ? तोहनी के मारे नाक में दम आ गइल बा। ते काहें रोवत बाड़े ?"

आम आदमी 2: "हमार बड़का भइया मू गइलें।" (रोवत बा।)

चौकीदार जी : "ऊ कइसे ?"

आम आदमी 2: "प्राइवेट कंपनी में काम करत रहलन। उहँवे बेमार हो गइल रहन।"

चौकीदार जी : "काहें ? दारू पीयत रहन का ?"

आम आदमी 2: "ना, सोलह घंटा खटत रहन। अढ़ाई हजार मिलत रहे। दस आदमी रहत रहन एके कोठरी में। का जाने का हो गइल रहे।"

चौकीदार जी : "कतना पढ़ल–लिखल रहन ?"

आम आदमी 2: "बी0ए0 पास रहन। फारम भरत–भरत हारि गइलें। कवनो नोकरी ना मिलल त पराइवेट में चलि गइलें।" (रोवत बा।)

चौकीदार जी : "जाये दे। निमने भइल। हक–हिस्सा ना बटाइल। भगवान ओकरा आत्मा के शांति देसु। रोउ ! खूब रोउ ! अउरी जोर जोर से रोउ। तोरो आत्मा के शांति मिल जाई। भइया भीरी चलि जो।"

(तीसरका आम–आदमी भीरी जात बाड़न। ओकरो से पूछत बाड़न)

चौकीदार जी : "तोरा रे ! तोरा कवन दुख बा ? तोहनी के रोवला के मारे नीमनो आदमी के जीयल हराम भइल बा। देश अतना विकास कर रहल बा, बाकी तोहनी के रोवल नइखे छूटत। बोल, का भइल बा तोरा ?"

आम आदमी 3 : "हमार लइका गइल रहे कमाये। बम विस्फोट में मरा गइल।"

चौकीदार जी : "एह में रोवे के का बात बा ? तोर बेटा देश खातिर शहीद हो गइल। ई त बहुत भाग के बात बा।"

आम आदमी 3: "ओकर मेहरारू राँड़ हो गइल। लइका टूअर हो गइल।"

चौकीदार जी : "ई त दुनियादारी ह। दोसर बिआह क लेउ। कतना मेहरारू त जीयत मरद छोड़ि के दोसर–तीसर बिआह क लेत बाड़ी स। ई त फैशन हो गइल बा आज के। कहियो ना कहियो त राँड़ होखही के रहे। जल्दी हो गइल, त बढ़िये नू भइल। राह के रोड़ा हटल। रोउ, खूब रोउ !"

(चउथा आम आदमी भीरी जात बाड़न। ओकरो से पूछत बाड़न।)

चौकीदार जी : "ओकनी के देखा–देखी तेहूँ रोवत बाड़े का ? तरबूजा के देखि के तरबूजा रंग बदलत बा ! आयँ ! देखा–देखी पुन आ देखा–देखी पाप ! तोरा प कवन विपत पड़ल बा ? काहें अतना चिचियात बाड़े ?"

आम आदमी 4: "हमरा जवान बहिन के इज्जत लुटा गइल।" (रोवत बा।)

चौकीदार जी : "जवान बहिन के ?"

"कहँवा जात रहे, आपन जवानी लेके ?"

आम आदमी 4: "जात ना रहे। आवत रहे पढ़ि के कालेज से।"

चौकीदार जी : "बस, एही खातिर अतना हड़सेड़ मचवले बाड़े। एह एकइसवी सदी में तोरा अस आदमी अबहीं जियते बो ? ई कवनो चीज ह रे भकचोन्हर ! नीमन नीमन घर के, नीमन नीमन लइकी एकरे बल पर कतना नाम कमा लिहली स। आ तें अबहीं ओनइसवीं सदी में बाड़े ?"

आम आदमी 4: "हमार इज्जते ना रहल त हम जी के का करब ? हम ओकरो के जीयत ना छोड़ब।"

चौकीदार जी : "ठीके बा, रोउ। खूबे रोउ। रोवते–रोवते मरि जो। एकइसवी सदी में तोरा अस आदमी के जरूरत नइखे। एही से महिला विधेयक खटाई में पड़ल बा।"

(चौकीदार जी, लवटि के सरकार जी पास जात बाड़न। चारो आम आदमी के रोवल जारी बा। सरकार जी, चौकीदार जी के देखि के पूछत बाड़न।)

सरकार जी : "का जी, का बात बा ? पता लागल ?"

चौकीदार जी : "बात कवनो खास नइखे सरकार जी। अइसन नइखे कि जाँच आयोग बइठावल जाय। एकनी के रोवे के आदत पड़ल बा। बिना रोवले ई जियबे ना करिहें स। कवनो भूख के बहाने रोवत बा। कवनो दुख के बहाने रोवत बा। कवनो इज्जत के बहाने रोवत बा। कवनो फजीहत के बहाने रोवत बा। रोवे दीं, एकनी के चलीं आपन

काम करीं जा। कउवा टटरात रहेला, धान सूखत रहेला।
कूकुर भुँकत रहेलन स, हाथी चलत रहेला।"

सरकार जी : "बाकी काल्हु तारनहार जी के आगमन बा। ई सभ गंदगी देखि के का सोचिहें ?
देश के शिकयते नू करइहें स ई !"

चौकीदार जी : "त का कइल जाई, रोवे के आदत वाला के हँसावल कइसे जाई ?"

सरकार जी : "हँसावे के नइखे। कवनो अइसन उपाय करीं कि तुरते अलोपित हो जा स।"

चौकीदार जी : "अलोपित माने ? खतम ? खलास ? हरदम खातिर ? एके बेर ? ई कइसे हो सकेला ?
गते गते त खतम होते बाड़न स।"

सरकार जी : "जइसे होखे। हम एकनी के देखल नइखीं चहात। सउँसे दुनिया चान प चलि गइल, ई नीच, नीचहीं खींचले रहत बाड़न स। बहुत शिकाइत होता एकनी के चलते, एह देश के।"

चौकीदार जी : "बाकी हऊ पगला त ना मानी।"

सरकार जी : "ओकरो के कवनो तरे पटा लेबे के बा, ना त सरग पठा देबे क बा। जबले ई रहिहें स देश के नॉव हँसइहें स। एकनी के देखते तारनहार जी के मन निहसि जाई। जवनो कुछ करे के मन होई, नकार दीहें।"

चौकीदार जी : "तारनहार जी कहिया आवे के बाड़न सरकार जी ?"

सरकार जी : "काल्हु ना, परसो।"

चौकीदार जी : "अरे बाप रे ! तब त ढेर समय नइखे।"

सरकार जी : "एही से नू कहत बानी, आज रातो–रात एकनी के काम तमाम करवा दीहीं।"

चौकीदार जी : "ठीके बा सरकार जी, जवन राउर हुकुम होई, तवने होई।"

सरकार जी : "चाबस बहादुर ! मुँहमागा इनाम दियाई। चल आगे बढ़ऽ। देखीं जा दखिन दिशा में।"

चौकीदार जी : "परेड, सावधान ! (सलामी दे के लेफ्ट–राइट, लेफ्ट–राइट करत आमे आगे जात बाड़न। पीछे पीछे सरकार जी के प्रस्थान होता।)"

[दृश्य – दू]

[नाटक स्थल पर चौकीदार जी आवत बाड़न। जोर जोर से आवाज देत बाड़न। **]**

चौकीदार जी : "सावधान ! होसियार ! रियाया के रहबर, परजा के परवर दिगार–पालनहार, तख्तो ताज के तारनहार पतालपुरी महराज पधार रहल बानी।"

(चारो कोना प खाड़ हो के आवाज देत बाड़न।)

[चौकीदार जी आवाज सुनि के चारो आम आदमी उनुका के घेर लेत बाड़न। उनका से पूछत बाड़न। **]**

आम आदमी 1: "के आवत बा चौकीदार जी ?"

चौकीदार जी : "तारनहार जी।"

आम आदमी 2: "ऊ कहँवा के हवन चौकीदार जी ?"

चौकीदार जी : "बहुत दूर देश के। जहँवा दिन में रात होला। रात में दिन होला।"

आम आदमी 3: "तब त उनुका राते में लउकत होई। दिन में ना लउकत होई ?"

आम आदमी 4: "अन्हरिया, अँजोरिया बुझात होई ! अँजोरिया, अँन्हरिया बुझात होई ?"

आम आदमी 2: "नीमन खराब लागत होई ? खराब नीमन लागत होई ?"

आम आदमी 1: "कवना जगह से आवत बाड़न चौकीदार जी, तनी फेर से बता दीहीं।"

चौकीदार जी : "पतालपुरी से।"

आम आदमी 1: "पतालपुरी माने रसातल से ?"

चौकीदार जी : "हँ, जी रसातल से।"

आम आदमी 2: "हमनियो के रसातल में ले जइहें का जी ? "

चौकीदार जी : "धत् बुड़बक ! हमनी के उद्धार करे खातिर आवत बाड़न।"

आम आदमी 3: "माने आपन सामान उधार देके हमनी के उघार करिंहे ?"

चौकीदार जी : "धत् बुड़वक ! हमनी के तारे खातिर।"

आम आदमी 4: "तारे खातिर कि ताड़े खातिर ?" "छुद्र गँवार ढ़ोल पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी।" ऊहे नू ?

चौकीदार जी : "ना रे मूरख, तारे खातिर। तारनहार जी आवत बाड़न।"

आम आदमी 1: "कराही में तरिहें कि तावा प जी ?"

चौकीदार जी : "बकवास बन करऽ लोग। जा लोग, जा। अपना अपना घर में लुका जा लोग।"

आम आदमी 2: "लुका जाईं जा ! ई काहें ?"

चौकीदार जी : "लुकइब ना, त आपन फटही–गुदरी देखावे जइबऽ। धंसल आँखि आ ठोकचाइल गाल देखावे जइबऽ। हड़री–हड़री नरकंकाल देखावे जइबऽ ?"

आम आदमी 3: "जइसन बानी जा तइसने नू लउकब जा।"

चौकीदार जी : "ना ना, तू लोग उनुका सोझा मत जइहऽ। उनुका सोझ जवान–जवान गदराइल लइकी जइहें स। ताकि उनुकर मन खुश होखे। सुंदर–सुंदर फूल ले जइहें स। बड़का बड़का लोग जइहें। नेता–मंत्री जइहें। हँसि हँसि के हाथ मिलइहें।"

आम आदमी 4: "ना ना, हमनियो के जाइब जा। देखब जा कि उनुकर कइसन सूरत बा।"

चौकीदार जी : "जइब लोग त मरइबऽ लोग। उनुका आवे से पहिले उनुका देश के एह हजार फउज आइल बा। हवाई अड्डा से लेके होटल तक आपन कब्जा जगवले बा।"

आम आदमी 1: "हमनी के देश में दोसरा देश के फउज ?"

चौकीदार जी : "हँ, हँ, चिहात काहें बाड़ऽ ? उनुका देश के खुफिया आइल बाड़न स। चप्पे चप्पे बइठल बाड़न स। तूँ लोग पकड़ा जइबऽ त आतंकवादी के भक में मरा जइबऽ। एक हफ्ता तक कड़क्का पहारा पड़ी।"

आम आदमी 2: "तारनहार जी इहँवा आके करिहें का ?"

चौकीदार जी : "भाग रे बुड़बक। अबही ले इहो ना बुझाइल। सउँसे रामायन हो गइल आ सीता के बियाहे ना भइल ? आयँ !"

आम आदमी 3: "त बता दीहीं। का करिहें आ के ?"

चौकीदार जी : "हमनी के मदद करिहें।"

आम आदमी 4: "जइसे इराक के कइले रहन ओसहीं"

आम आदमी 1: "ना, जइसे अफगानिस्तान के कइले रहन ओसहीं।"

आम आदमी 2: "कि जइसे वियतनाम के कइले रहन ओइसे ?"

आम आदमी 3: "कि जइसे जापान के कइले रहन ओइसे ?"

आम आदमी 4: "भाग बुड़बक ! जइसे पाकिस्तान के करत बाड़न ओइसे।"

आम आदमी 1: "कि जइसे इजराइल–फिलीस्तीन के कइले बाड़न ओइसे।"

चौकीदार जी : "तोहनी के मूरूख हवऽ सऽ। ई हमनी के करज दीहें। हमनी के देश में कल–कारखाना लगइहें। अपना देश के बनल सभ सामान दीहें। कुछो बाकी ना छोड़िहें।"

आम आदमी 2: "ओकरा बदला में लीहें का ?"

आम आदमी 3: "इज्जत, आबरू, भासा, संस्कृति, जोश–जवानी, स्वाभिमान–संवेदना आउर का ? इहो नइखे बुझात ?"

आम आदमी 4: "बाकी होसयार जी कहत रहन कि ई हमनी के मदद करे नइखन आवत।"

चौकीदार जी : "तब का करे आवत बाड़न ?"

आम आदमी 4: "हमनी के महादेश प कब्जा जमावे खातिर आवत बाड़न।"

चौकीदार जी : "ना ना, ई बात एकदम झूठ ह। केहू के बात मत सुनऽ लोग। जा लोग जा, अपना अपना घर में लुका जा लोग। उनुका के आपन गरीबी आ फटही–लुगरी मत देखइहऽ लोग।"

आम आदमी 4: "उहूँ, रउवें झूठ बोलत बानी। होसियार जी कहत रहन कि ऊ अपना साम्राज्यवादी–भूमंडलीकरण नीति के निगरानी आ फैलाव करे खातिर आवत बाड़न।"

आम आदमी 1: "होसियार जी झूठ ना बोलेलन। ऊ अपना बहुदेशी कंपनियन के बचावे खातिर आवत बाड़न।"

चौकीदार जी : "ना भाई, ऊ हमनी के निस्तार खातिर आवत बाड़न।"

आम आदमी 2: "मास्टरो साहब कहत रहन कि ऊ अपना पूँजी के विस्तार खातिर आवत बाड़न। अपना बैंकन के बढ़ावा खातिर आवत बाड़न।"

आम आदमी 3: "ए चौकीदार जी, साफ साफ काहें नइखीं बतावत कि ऊ अपना मंदी के सुधार खातिर आवत बाड़न, अपना हथियार बेचे खातिर आवत बाड़न, अपना बाजार खातिर आवत बाड़न।"

चौकीदार जी : "ई सभ बात तहरा लोगन के बतावल हा भाई, जा लोग जा, इहे जान ल कि ऊ हमनी के उद्धार खातिर आवत बाड़न। (चौकीदार जी फेर, आवाज देत बाड़न) साऽ व धाऽ न ! हो ऽ सि यार ! .....।"

आम आदमी 4: "ए चौकीदार जी, रउवो दलाले हईं का उनुकर ? घूस ले ले बानी उनुका से ? ई काहें नइखीं कहत कि उनुकर हथियार के सभ कारखाना बंद बाड़न स। ओकरा के चालू करे खातिर बेचैन बाड़न।"

चौकीदार जी : "हे भगवान ! ई सभ राज के बात, के बता देता तहरा लोग के ? जा लोग जा, अपना घरे जा।"

आम आदमी 1: "हमनी के जानत बानी जा। इहे ओह साल अफगान प भयंकर बमबारी कइले रहन।

आम आदमी 2: "हँ हँ, इहे हवन, इराको प खूब बम आ मिसाइल बरिसवले रहन। लाखो लोगन के तड़पा–तड़पा के मरले रहन।"

आम आदमी 3: "इनिकर इहे कामे ह भाई। जापानो के इहे बरबाद कइले रहन। पहटोपहट क देले रहन नागासाकी आ हिरोशिमा के।"

(चौकीदार जी ओह लोगन के बात सुनि के चिहाइल बाड़न।)

आम आदमी 4: "लादेन आ मुल्ला उमर के इहे शह देके बढ़वले रहन।"

चौकीदार जी : "ना, ना, ई बात ना ह। ई बात साँच होइए ना सके।"

आम आदमी 1: "इनिकर बाप आ लादेन के बाप एगो व्यापार में पाटनर ना रहे लोग ? इहो झूठ ह ?"

आम आदमी 2: "चार करोड़ तीस लाख देले रहन तालिबान के, अफगानिस्तान के अफीम के खेती जरा देबे खातिर। इहो झूठ हऽ ?"

आम आदमी 3: "ए भाई, होसियार जी कहत रहन कि नव–एगारह के घटना में इनिकरो हाथ रहे। अफगानिस्तान सहित दुनिया के दोसरो भाग में लड़ाई के माहौल बनावे खातिर। आपन आर्थिक मंदी दूर करे खातिर।"

आम आदमी 4: "ऊ त इहो कहत रहन कि कजाकिस्तान, ताजकिस्तान, आ उजबेकिस्तान में ई आपन सैनिक अड्डा बनवले बाड़न।"

आम आदमी 1: "अपना अरब सागर में, हिंद महासागर में आ बंगाल के खाड़ी में आपन सैनिक अड्डा ना बनवले रहन का ? इनिकर नीयत छिपल नइखे केहू से।"

आम आदमी 2: "तब त दाल में काला बा ए भाई ! पाकिस्तान के साथे हमनी के लड़ा के काश्मीर आपन बनावे के सोचले बाड़न। ताकि हमनी के मस्तक प बइठि के चीन आ रूस प अंकुश लगा सकसु। एही से ई हुर्रियत के मन बढ़वले बाड़न।"

चौकीदार जी : "झूठ ! एकदम झूठ ! सावधान ..... होसियार .... रियाया के ....."

आम आदमी 3: "अफगानिस्तान में आपन कठपुतरी सरकार बना के चीन, वियतनाम, कोरिया आ रुस के केवाड़ी बन कइले बाड़न, इहो झूठे ह ? आँखि आन्हर बा। सफेद साँच नइखे लउकत ?"

आम आदमी 4: "चमइन के आगे ढ़ींढ़ मत छिपाईं जी। हमनी के सभ मालूम बा। हमनी के आँखि में धूर मत झोकीं।" (चारो आदमी हँसत बाड़न।)

चौकीदार जी : (चारो आदमी के हँसी देखि के खीसी भूत हो के बोलत बाड़न।) "तहरा लोग के हँसल भुलवा देब। हमरा के जानत नइखऽ लोग अबहीं। जा तानी सरकार जी से सभ बात कहे। हगनी–मूतनी बन करवा देब। काउन्टर करवा देब। नाही त असल बाप के बेटा ना।"

(तमतमा के जात बाड़न। जाते जात चिचियात बाड़न।)

"सावधान ! होसियार ! जनगण के परवरदिगार, पूँजी के झंडाबरदार, हमनी के तारनहार, भाग्यविधाता श्री तारन जी (भुला के) हार जी दुनिया के मुख्तार जी पधार रहल बानीऽ ऽ ऽ ऽ।"

(शेष अगिला अंक में क्रमश....)

राष्ट्रीय आ समाजिक विषयन पर रम्य, रोचक आ व्यंग्य लेखन खातिर प्रसिद्ध लेखक

राजगुप्त

के दू गो सद्यः प्रकाशित पठनीय आ संग्रह जोग किताब

दुखिया दुकानदार

मूल्य–75/–

प्याज–पंचायत

मूल्य–100/–

प्रकाशक – 'प्रेम प्रकाशन' राज साड़ी घर, चौक रोड बलिया (उ0 प्र0)

कसौटी/पुस्तक चर्चा

मानुष मूल्यन के खड़ा करे क एगो अउर कोशिश : 'पगला–पगली'

❑ सान्त्वना

'पगला–पगली' (कहानी संग्रह), लेखक – भोला प्रसाद आग्नेय, मूल्य – 175/–, पृ. सं. 107, प्रकाशन – भोजपुरी संस्थान, पटना।

आदर्श मानवीय मूल्यन क स्थापना करत भोला प्रसाद आग्नेय के किताब 'पगला–पगली' उनका सत्रह गो कहानियन के संग्रह हऽ। संक्रमण काल में जीयत आ घिसटत भारतीय समाज के फिर से पीछे मुड़ के सभ के साथ लेके चले के राह देखावऽता। आधुनिक समाज में रिश्ता से अधिका पइसा क महता बा। हर आदमी पइसे खाता, पइसे पियऽता अउर पइसे पर सूतल चाहता। ऊ सभ रिश्तन आ ओकरा से जुड़ल मानवी संवेदना अउर मर्यादा के तिरस्कार करे में देरी नइखे करत। 'आग्नेय जी' एइजे से फिर वापस मुड़े क बात कहत बाड़ें। ऊ कम खाइ के, कमे में रहि के प्रेम से सबके साथ लेके आगे बढ़े के कहत बाड़े, रूके के नइखन कहत। 'तेतरी' कहानी में तेतरी के सवत मरद के मुअला के बाद कुल संपत्ति अपना बहिन के लइका के देके तेतरी के घर से निकाल देले बिया। बाद में तेतरी ओही लइका के घरे गिट्टी फोरे के काम करत खा, आपन सवत के खराब स्थिति में देखि के उनका संगे दुर्व्यवहार कइले रहलें, ओही सवत के मान–सम्मान खातिर नौकरियो छोड़े में तनकियो देरी नइखे करत। शीर्षक कहानी 'पगला–पगली' सौतियाडाह में जरत सौतेली माता के ओछ विचार–व्यवहार क कहानी बा, जवना में ऊ मरल सवत का लड़िकन के पगला–पगली संबोधन देके हरमेस दुतकरले बिया आ अपना लड़िकन के पढ़ावे–लिखावे आ आगे बढ़ावे में जिनिगी बिता देत बिया। बुढ़ापा में कूल्हा छटकला पर ओकरा असहाय अवस्था में ओकर आपन ना बलुक ऊहे 'पगला–पगली' कामे आवत बाड़न सऽ आ उनके संकट से उबारत बाड़न सऽ।

कवनो साहित्यिक कृति खालि अपना विषय–वस्तु के कारन महान ना बनेला, ओकरा संगे–संगे खास होला ओकर 'ट्रीटमेंट'। कृतिकार के 'दृष्टि' (Vision) कृति के विषय–वस्तु आ ओकर 'ट्रीटमेंट' दूनो से झलकेला। पात्र आ कथावस्तु त कृतिकार आपन आस–पास क समाज से ग्रहण करेला, बाकिर 'ट्रीटमेंट' ओकर नितांत आपन होला।

हिन्दी कथा साहित्य बहुत पहिलहीं समय के साथ आदर्शवादी यथार्थवाद से बाहर निकलके यथार्थवाद के ओर अपन डेग बढ़ा लेले रहे। लेकिन ऊ आदर्श मानवीय मूल्य आजो भोजपुरिया समाज में कहीं–कहीं पुरनिया लोगन के माध्यम से बाँचल रहि गइल बा। एह से ओही तरह के ट्रीटमेंट आज तक भोजपुरी साहित्य में जारी बा। 'आग्नेय जी' के कुछ कहानी जइसे 'हीरा–मोती' आ 'चकोरी चाची' आदि के छोड़ि के लगभग सभ कहानियन के अंत में तिरिया चरित्रर वाली औरतन अउर खल–पात्रन क आकस्मिक आ नाटकीय ढंग से 'हृदय परिवर्तन' हो जाता। ऊ चाहे 'करझिमनी' होखे, 'बाँझिनिया क बेटा' होखे भा 'मौनी बाबा', 'लछुमन देवर', 'सखन बेटा' अउर 'पगला–पगली'। लगभग कूल्कि कहानियन के अंत 'भारतीय गद्य कथा' (हितोपदेश आ कथासरित्सागर

आदि) आ मिथकन के आधार पर दुखद से अचानके सुखद अंत के ओर घूम जाता, अउर अंत में एगो सीख दे जाता कि 'बोये बीज बबूल के त आम कहां से होय ?' जवन करबऽ ओकर फल एही जनम में मिली। सँगहीं कुछ कहानियन में जइसे 'हीरा–मोती' आ 'चकोरी चाची' में तेजी से बदलत गँवई समाज लउकता। छोट–मोट चीजन खातिर लरछुताही से लेके, अपना बड़ स्वार्थ खातिर बड़–बड़ पाप करे में अदिमी नइखे चूकत। अपना स्वार्थ सिद्धि खातिर रिश्तन के संवेदनो में मरिचा रगड़ देता। एह दूनो कहानियन में 'आग्नेय जी' नाटकीय ढंग से हृदय परिवर्तन के फार्मूला छोड़ के आदर्शवादी ट्रीटमेंट से यथार्थवादी ट्रीटमेंट की ओर आइल बाड़े। एही से ई कहानी कुछ विशेष बन पड़ल बाड़ी सन्। 'चकोरी चाची' में चाची होके महतारी नियर पालन–पोषण कइला के बावजूद बेटा–पतोह बूढ़ चकोरी चाची के घर से निकाल देत बाड़े। उनकरा नाँवे संपत्ति के बारे में पता चलते, फेर लार टपकावत उनकरा के बोलावे पहुंच गइल बाड़े लेकिन तब चकोरी चाची एह दूनो के पहिचाने से इनकार कऽ देले बाड़ी। अउर 'हीरा–मोती' दू बैलन के मित्रता के कथा ना, बलुक एक मित्र के दूसरा मित्र के प्रति धोखेबाजी आ संपत्ति अधिग्रहण क कथा ह। एह में गंवई प्रेम ना, गंवई क्षुद्रता के वर्णन बा। भारतीय गाँव आइल त बा लेकिन यथार्थ रूप में, अपना आदर्शवादी खोल में ना।

कूल्हि कहानी अलग–अलग कथा वस्तु के माध्यम से लगभग एके बतिया समुझावत बाड़ी सन्। एही से इन्हनी के फलक तनी सीमित लागऽ ता। शैली में जरूर कुछ नयापन बाटे। इहाँ परंपरागत एकरेखीय शैली के प्रयोग नइखे कि, एगो राजा एगो रानी, दूनो मुवलन खतम कहानी। कहानी के शुरूआत होले पात्रन के बातचीत से, जवन पाठक के मन में एक तरह के जुगुप्सा के निर्माण करेले। फेरु पात्रक के परिचय आ 'फ्लैशबैक' या 'कहनी' के माध्यम से वस्तुस्थिति के वर्णन होला। शैली में 'नवीनता' होखला के बावजूद समस्या ई बा कि अपवाद रूप में 'हीरा–मोती' के छोड़िके सभ कहानियन के 'पैटर्न' इहे बा। 'हीरा–मोती' में कहानी बातचीत से आरंभ ना होके, सीधे वर्तमान वस्तुस्थिति से 'फ्लैशबैक' में चल जा तिया, अउर फिर वर्तमान वस्तुस्थिति के सामने ले आवत बिया।

भाषा त बेजोड़ बा एह में इचिको संदेह नइखे। इ जरूर बा कि जवन 'आदर्श' मानवीय मूल्य, भारतीय संस्कृति आ पंरपरा के सकारात्मक तत्व भाप लेखा समाज से उड़ल जाता; भोला प्रसाद 'आग्नेय' के कहानी फेरु ओह भाप से बादल बना के ओही मूल्यन आ सकारात्मक तत्व के भारतीय आधुनिक समाज में बरिसा रहल बाटे। मानुष–मूल्य के फेरु आधुनिक समाज के जमीन में रोपे के कोशिश कइला के सराहल जाये के चाहीं। ''पगला–पगली'' कहानी संग्रह एह लिहाज से पठनीय बा। ●●●

कोयल कऽ शहनाई

❑ **भागवत पांडेय 'सुधाशु'**

सपनलोक से सपना लेके आवति बा पुरवाई।
पियरा में निज सिहरन लेके झूमति बा अमराई।
कानन में अमरित घोरति बा कोयल कऽ शहनाई।
प्रीत जगावति बा कलियन में भौंरन कऽ चतुराई।
पास बुलावति बा जन जन के लतिका कऽ सुघराई।
राह निहारति बा प्रियतम कऽ गोरी के तनहाई।
विरह–पीर से पीड़ित जिनिगी कबले अउर नसाई ?
आगत पतिका के नस नस में विहँसति बा अंगड़ाई।
●●●

दउरत दुनिया में, अपना इयत्ता आ जीवन-सत्य के खोज

❑ **सुशील कुमार तिवारी**

'दुनिया दउर रहल बा'; कवि – जनार्दन प्रसाद द्विवेदी, मूल्य – 102/–, पृ. सं. 48, प्रकाशक – महामना पं. मदन मोहन मालवीय सेवा – समिति, पटना।

वयोवृद्ध कवि जनार्दन प्रसाद द्विवेदी के तिसरका कविता – संग्रह 'दुनिया दउर रहल बा' उनका 32 गो कवितन क संग्रह बा। कवि का मोताबिक एह संग्रह के रचनात्मक 'गतिशीलता' 'विशेष परिस्थिति के देन' ह – "ई हमार स्थायी भाव ना ह; काहे कि हम कवि आ लेखक का अपेक्षा पारिवारिक व्यक्ति ज्यादा बानी।" संकलन में अलग–अलगे मनःस्थिति के भावबोध के अभिव्यक्ति बा। सामाजिक; राजनैतिक दूनों से जुड़ल मानवीय पक्ष के जथारथ, जवन कवि निजी अनुभूति से जनले–समझले बा; ऊ बिना कवनो–पूर्वग्रह आ बे लाग–लपेट के सहज रूप में कहे के भरसक कोसिस कइले बा। कहीं ऊ नैतिक अवमूल्यन आ विसंगतियन पर व्यंग्यात्मक हो जाता त कहीं अनुभूत–सत्य का आधार पर उपदेश आ सुझावो देबे से नइखे चूकत। कवि के सोच एकदम सोझ–साफ बा कि जीवन के संघर्ष आ परिस्थितियन के दबाव अपना जगह पर बा, बाकिर आदमी के सकारात्मक दिशा आ राह पकड़े के चाही। एह जुग के अन्हरदउड़ में, आगा बढ़ले में कल्यान बा।

संगह के अधिकांश कविता में समाज आ व्यवस्था के दिसाईं बिचार, आ अनुभूति त बहुत सहज वेग का साथे प्रस्फुटित भइल बा, बाकि रचना–विधान में तुक के बइठाव का ध्यान में, प्रवाह आ मात्रा के वजन से ध्यान कम हो गइल बा, जवना का चलते कविता पढ़त खा उढ़ुक लागऽता आ रूके के पड़त बा। कविता के आन्तरिक–संगति में, रचना–विधान पर अंकुश जरूरी होला, एही से काव्य–कौशल प्रगट होला। भावावेग आ भाविभिव्यक्ति के स्तर तक रचना–विधान क इहे तालमेल आ 'अंतरसंगति' कविता से पाठक तक सहज संप्रेषणीय बनावेले। कुल मिला के 'दुनिया दउर रहल बा' संग्रह के कविता धीरज से पढ़े आ गुने लायक बाड़ी स। ●●●

इतिहास के एगो नया पन्ना : 'पहिला नायक'

❑ **विष्णु देव**

नाटक – 'पहिला नायक'; लेखक – सुरेश कांटक, नवशक्ति प्रकाशन, कांट (ब्रह्मपुर) बक्सर, बिहार, मूल्य – 70/ रूपया।

सुरेश कांटक के लिखल, पाँच अंकन के नाटक 'पहिला नायक' भोजपुरी नाटक पंरपरा में अपना वस्तु के नवीनता, प्रस्तुति के सहजता आ उद्देश्य के गंभीरता के लेहाजे एगो महत्त्वपूर्ण कृति बा। ई नाटक भारतीय इतिहास के एगो अइसन उज्जर पन्ना के गोचर करत बा, जे आज ले पंरपरागत इतिहास के सोझा अपना असली गौरव – भूमिका में ना आइल रहे। आजु ले भारत के इतिहास के पढ़वइया इहे पढ़त आइल बाकि अँग्रेजन के खिलाफ संगठित आ समर्पित पहिल. की लड़ाई कुँवर सिंह, रानी लक्ष्मीबाई, तात्याँ टोपे, नाना

साहेब आ मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर द्वितीय आदि के नेतृत्व में सन् 1852 ई में लड़त गइल रहे, जेकर शुरूआत बलिया के मंगल पाँडे के एनफील्ड राइफल के कारतूस के मुँह से ना खोले के संकल्प के साथे सैनिक छावनी से शुरू भइल रहे; बाकिर काँटक जी अपना नाटक का जरिये, आजादी के पहिलकी लड़ाई के सइ साल पीछे ले जात बाड़न, जेकर शुरूआत तत्कालीन सारण आ वर्तमान गोपालगंज जिला के हुस्सेपुर के महाराजा फतेह बहादुर शाही 1765 ई. में शुरु कइले रहले। एह लड़ाई में उनका संगे अवध के सूबेदार नजीर, बंगाल के नवाब बादशाह आउर बनारस के राजा बलवंत सिंह साथ देले रहे लोग। कांटक जी के कहना बा कि अक्षयवर दीक्षित जी के प्रेरना से ऊ आजादी के एह पहिल नायक के वीर–गाथा के चरित्रांकन कर पवले बाड़न। ई लड़ाई मुकम्मल रूप से पहिला हाली अँग्रेजी साम्राज्यवाद आ शोषण के खिलाफ दीर्घकालिक युद्ध के शुरुआत कइले रहे आ जेकरा आवाहन पर ना खाली सिपाही बलुक आम किसान आ वीरांगना मेहरारूओ स्वेच्छा से भाग लेले रहली स। अंक तीन के पहिला दृश्य में अइसने एगो नारी चंपा के सोझा ले आवत गइल बा, जे नारी के सहज व्यापार, सेक्स आ सिंगार–पटार से ऊपर उठ के देश खातिर नारी जागरण करे खातिर तइयार हो जात बिया। ओकर आवाहन बा– लोग आपन–आपन हथियार पिजा लेउ आ अपना–अपना मरद सवाँग–बेटा संग लड़े खातिर तइयार हो जाव।

ई द्रष्टव्य बा कि एह नाटक के पहिले फतेह बहादुर शाही के इतिहास के आमजन का सोझा ले आवे में डॉ0 मैनेजर पाण्डेय, पं0 अक्षयवर दीक्षित आ डॉ0 तैय्यब हुसैन पीड़ित जइसन सूझ–बूझ वाला साहित्यकारन के महती भूमिका रहल बा। कांटक जी एही भूमिका पर इतिहास–घटना के नाटक के रूप में प्रस्तुत कइके एकरा के अउरी प्रभापूर्ण आ भावाभिव्यंजित करे में, आपन सुंदर प्रतिभा के उपयोग कइले बाड़े। एह नाटक के एगो महत्वपूर्ण खूबी ई बा कि ऊ कवनो जय–क्षय मेंना, एगो प्रवाह में खतम होत बा कि एह में कंपनी के सरताज वारेन हेस्टिंग्स फतेह बहादुर शाही से मात खाइके, परान लेके चुनार का ओर भागत देखावल गइल बाड़े। 'पूर्व दृश्य : अतीत गाथा' के सहारे नाटककार फतेह बहादुर शाही के कुल खनदान के परिचय गायक दल से करवावत बा, जे से पढ़वइया के सोझा वर्तमान आ अतीत दूनो संगे–संग एगो सहज भाव में उपस्थित होत लउकत बा। नट–नटी के आपसी बतकही, चुहल आ गीत–गवनई नाटक के सहज–संप्रेषण के कोसिस जनात बा। आशा बा, ई नाटक मंचो के दिसाई सफल होई।

नाटक के एगो महत्वूपर्ण तत्व होला संघर्ष, जेकरा साथे आवश्यक रूप से तनाव आ कौतूहल बनल रहेला। अइसन लागता, नाटककार एह बात पर बहुत ज्यादा ध्यान नइखे दिहले आ ना त पात्रन के संवादन से या नट–नटी आ गायकन के आलापन से एह तत्व के सुबहित ताना–बाना बुने के चेष्टा कइले बा। खाली वर्णन से आ पहिले से तय विचारन के सोझा ले आवे के उतजोग से रचल कृति में, 'रस' के बाधित होखे के अंदेसा बराबर बनल रहेला।

कांटक जी भोजपुरी के एगो समर्थ लेखक हवे आ, 'पहिला नायक' के पहिले भोजपुरी में भिन्न–भिन्न विषयन प ऊ आठ गो नाटक प्रकाशित करवा चुकल बाड़े। 'नव ग्रह' नियर, उनकर नवो नाटक भोजपुरी साहित्य में ढेर अँजोर फइलावत बरत रहिहें स।

●●●

प्रगतिशील चेतना के कविता: 'का ए बकुला'

'का ए बकुला ?', कवि – सुरेश कांटक, मूल्य – 60/–, नवशक्ति प्रकाशन, कांट ब्रह्मपुर, बक्सर, 802112।

❑ रामानंद गुप्त

प्रगतिशील चिंता–चेतना आ वामपंथी तेवर में हँसे–हँसावे आ चिउँटी कटला अइसन व्यंग करे खातिर भोजपुरी के जियतार शब्द आ मुहावरन से सजल सजावल कविता लिखे, आ कहे सुनावे खातिर भोजपुरी के कथाकार नाटककार सुरेश कांटक जवन कविता लिखले बाड़न, उन्हने के संग्रह ह 'का ए बकुला?', 'हाड़ा', 'बकुला', 'भइँस', 'बैल', 'मुर्गा', 'कउवा', 'बिलाई', 'जोकर', 'मदारी' जइसन गॅवई शब्द–प्रतीकन के जरिए देस के सामाजिक, राजनीतिक परिवेश आ बेवस्था का विसंगतियन पर कांटक जी नीक व्यंग कइले बाड़न।

उन्तालीस गो कवितन से भरल ई किताब एक सौ बारह पृष्ठ के बिया। एमें गाँव–जवार, देहात में बोले बतिआवे वाला शब्दन का जरिए सामान्य पाठकन के मन–मनसायन करे खातिर बहुत कुछ मिली। समाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आ धार्मिक बिसंगतियन पर, लूट, शोषण, ठगी, भ्रष्टाचार, झूठ आ झाँसा पर, कवि के 'तात्कालिक कमेन्ट' कविता बनि जाता। कुछ खास कवितन में कवि के कवित्व आ 'बाग्विदग्धता' देखे के जरूर मिलता आ 'कमेन्ट' सार्थक आ सोद्देश्य बनि जाता, नाहीं त कई गो कविता तुक–बइठाव, भावुकता, सतही उसाँस आ आलाप बनि के रहि जा तारी सन। 'जुल्फी जापान के', 'विश्वसुन्दरी', 'पेन्हाइल गाइ', 'मुरगा बोलल', 'गुन–गान', 'प्रदूषण फइलत बा' आदि कई गो कवितन में कवित्व, कसाव के कमी झलकत बा। 'का ए बकुला' के भाषा जरूरत के मुताबिक भोजपुरी के शब्द–शक्ति के कारन जीवंत, चटक, धारदार आ 'अपील' करे वाली बिया, जवना के चलते 'का एक बकुला ?' किताब के पढ़वइया के लगातार रस आनंद मिलत रही। कांटक जी भोजपुरी के पोढ़ लेखक हवें। 'का ए बकुला ?' उनका सृजनात्मक मौलिकता के अभिव्यक्ति के आधार बा जवना पर आगा उनुका सोच के नया ऊँचाई, दीठि के नया फइलाव आ अभिव्यक्ति के अउर गहिराई मिली। ●●●

इतिहास से जुड़ल एगो संवेदनशील उपन्यास 'बेचारा सम्राट'

❑ हीरालाल 'हीरा'

'बेचारा सम्राट', लेखक – अनिल ओझा 'नीरद', मूल्य – 150/–, प्रकाशक : जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्, 102, जोन नं0 – 11, बिरसानगर, टेल्को, जमशेदपुर, झारखण्ड।

अनिल ओझा 'नीरद' भोजपुरी के पुरान कवि, लेखक हईं। कलकत्ता से निकले वाली 'भोजपुरी माटी' के कुछ समय तक सम्पादनो कइले बानी। भोजपुरी के कई गो साहित्यिक संस्था से जुड़ल 'नीरद' जी के कविता संग्रह 'पिंजरा के मोल' खण्डकाव्य 'वीर सिपाही मंगल पाण्डे' कहानी संग्रह 'गुरुदक्षिणा' का बाद ई भोजपुरी उपन्यास 'बेचारा सम्राट' सामने बा।

भारतीय इतिहास में चर्चित मगध सम्राट अशोक के कालखण्ड में एगो चर्चित चरित्र नायक कुणाल पर पहिलहूं कई लोग 'खण्डकाव्य' आदि लिख चुकल बा। 'बेचारा सम्राट' उपन्यास में मुख्य पात्रन का रूप में सम्राट अशोक, उनकर बुढ़ारी समय के अंन्तिम

पत्नी तिष्यरक्षिता, पहिलकी पत्नी के पुत्र कुणाल आ इनकर रानी कांचनमाला मुख्य बा लोग। उपन्यास के कथा एही पात्रन के इर्द–गिर्द घूमि रहल बा, जवना के मूल आधार इतिहास बा, आ जवना में राजमहल के अन्दरूनी हालत में सुन्दर, कमसिन आ रूप का अभिमान में चूर तिष्यरक्षिता के महत्वकांक्षा आ अतृप्त वासना से उभरत विफल प्रेम के प्रतिशोध आ षडयंत्र के कहानी बा। एही में अपना करनी के परिणाम भोगत बेचारा सम्राट के परिणति घटित होता।

उपन्यास के स्त्री पात्र तिष्यरक्षिता में ऐश्वर्य, वैभव आ सत्ता का साथ–साथ अपना रूप आ यौवन के अभिमान बा। बूढ़ अशक्य पति से तृप्त ना भइला पर उनुका वासना के लावा सुन्दर आ युवा युवराज कुणाल पर फूटि परतबा, जवना में माता पुत्र के पवित्र सम्बन्ध आ नैतिक मूल्य बहि–बिला जाता। उच्च आ आदर्श चरित्र वाला युवराज कुणाल लायक आज्ञाकारी आ कर्तव्यपरायण बेटा भलहीं होखसु, बाकी नियति का जांता में पिसात बाड़न। अपना पर आसक्त हरेक तरह से असफल रानी तिष्यरक्षिता के कूट षड़यंत्र, दुरभि– संधि आ छल का कारन अनासो दण्ड के पात्र बनल कुणाल आपन राजपाट आ दूनो आँखी के जोति गवॉ दे तारे। उनकर पत्नी कांचनमाला पति परायणा आ उद्दात चरित्र वाला कर्तव्यनिष्ठ रानी बाड़ी। आगा चलि के ऊ पति का प्रति भइल अन्याय खातिर संघर्ष करत बाड़ी। तिष्यरक्षिता के छल, प्रपंच आ दुरभिसंधि उजागर हो जाता आ षड़यंत्र रचे वाली क्रूर अभिमानी तिष्यरक्षिता का संगे–संगे उनकर सहायक रुद्रसेन आ उनकर सहायकन के दण्ड मिलऽता। बाकिर राजपाट आ नेत्र जोति से हीन अनासो प्रताणित, दण्डित, कुणाल विरक्त भिक्षुक का रूप में मोह माया, सत्ता त्याग देत बाड़न, आ अन्त में रानी कांचनमाला पति का साथ भिक्षुणी बनि के बुद्ध का शरण में चलि जात बाड़ी।

इतिहास आ 'क्रियेटिव' कल्पना के संजोग से बुनल–रचल एह उपन्यास के कथा शिल्प में 'नीरद जी' न खाली पात्रन के चरित्र के जीवंत चित्रण कइले बाड़े, बलुक ओह काल खण्ड के जथारथ अप्रासंगिक परिस्थितियन आ परिवेश के कुशलतापूर्वक गढ़ले बाड़े। घटना–चक्र के नाटकीय उभार, अपना कल्पनाशीलता से उभारत खा नीरद जी पात्रन के जीवन्त चरित्र चित्रण में सफल भइल बाड़न। तत्कालीन समाज, राज बेवस्था आ न्याय–अन्याय का प्रति सजग नागरिक प्रजा के भीतरी संवेदना के उजागर करत, लोकतांत्रिक मर्यादा के महत्व के रेखांकित करे क उनकर कोशिश सफल भइल बा।

ऐतिहासिक, उपन्यास के हर बात इतिहास से पुष्टे होखे ई जरुरी नइखे, नीरद जी अपना कल्पनाप्रवणता आ सिरजन–शक्ति से अपना उपन्यास के मुख्य पात्रन के मनोवैज्ञानिक चरित्र–चित्रण क के, ई दिखावे में सफल भइल बाड़न कि परम प्रतापी राजा जब, अपना उमिर के आखिरी पड़ाव में, अपना सुख–सुविधा, वासना आ विलास खातिर, आपन नैतिक दायित्व के बिसरा देला त बेचारा हो जाला। भाषा अउर शैली दूनू के कथानुरूप आ समय–अनुरूप प्रयोग उपन्यास के पठनीय बनावऽता। नीरद जी के ई उपन्यास भोजपुरी उपन्यास–परंपरा में आइल कमी के दूर करी, एमे संदेह के गुंजाइश नइखे।

●●●

राउर पन्ना

'पाती' के नवका अंक (अंक – 60) देखि के चिहा गइलीं। सोचनी कि भोजपुरी में अइसन पत्रिका अगर 'बुक स्टालन' पर रखाए लागऽ सन त भोजपुरिहा भाई लोग बेहिचक मातृभाषा का एह पत्रिका के हाथो हाथ ली; बाकिर फेरु तुरंते पत्रिका निकाले वाला लोगन क साधनविहीनता आ वितरन–व्यवस्था का असहाय स्थिति क खेयाल आइल त मन थिरा गइल। 'पाती' के हरेक अंक हम नइखीं देखले। टप्पा–टोइयां जवन दू चार गो केहू भाई का जरिये भेंटा गइल। एह बेर का अंक में, स्तरीय गंभीर संपादकी, मरम छूवे वाला संवेदना जगावे वाला गीत आ देश–गाँव के समेटत अंक का कवि जुगानी जी के कुछ कविता हमके बहुते अच्छा लागल। पहिली कहानी त फार्मूला टाइप रहे, बाकिर कृष्ण जी के "भैरो ब्रह्म" अपना आप में संपूर्ण कहानी लागल थीम, शिल्प आ नाटकी अंत सब मिला के बहुत बढ़िया। रउरा पत्रिका में एगो अउर सराहे लायक विशेष बात नजर आइल – जल, जमीन, जंगल आ पर्यावरन के लेके चिन्तनशील आलेख। राउर परेशानी हम समझत बानी। पत्रिका के पाँच–छव कापी हमरो पता पर भेजल करीं त हम ओकर वितरन कऽके, अउर भाई लोगन से सलाना सहजोग भेजवाइब।

● बेनी माधव, तूरा–बाजार, तूरा (मेघालय)

पत्रिका के बाहरी भीतरी दूनू रुप उत्तम आ आकर्षक लागल। 'हमार पन्ना' में 'बदलाव के आन्हीं' खूब झकझोरलस 'तवे दूपहर जेठ के' आ 'मड़इया मोर...' सामयिक भावबोध के प्रभावकारी रचना लागल; बाकि केहू एके कवि के नौ गो कविता (अंक के खास कवि) छापल न्यायसंगत ना लागल। 'भैरो ब्रह्म' के आधा भाग दोसरा अंक में दे के, पाँच–छव पन्ना दोसरा लेख खातिर बचावल चाहत रहे।

● वेद प्रकाश द्विवेदी, प्रज्ञा निकेतन, जयप्रकाशनगर, पटना–1

अरसा बाद नया सज–धज का सभ्य 'पाती' के जून–अंक मिलल। नया कलेवर, नयनाभिराम आवरण। सब के सब सामग्री पठनीय, सराहनीय आ सब कुछ ताजा–ताजा लागल। शायद मुद्दत का बाद अंक मिलला से अइसन एहसास भइल। ''बहुत दिनन पर 'पाती' आइल। जइसे आपन थाती आइल।। कविता– कहनी, गीत–गजल सब। सुन्दरता से सजल–मॅजल सब। झूमल मनवां, जिया जुड़ाइल।। नया कलेवर, साज नया बा। मनभावन, अंदाज नया बा। कतनो पढ़नी, मन ना अघाइल।। हर रचना पठनीय, तरासल। तिरपित अॅखिया भइल पियासल। चुनर कल्पना के लहराइल।। बहुत दिनन पर 'पाती' आइल''।।

● शिवपूजन लाल, प्रकाशपुरी, आरा, (बिहार)

'पाती' अंक–60। संपादकीय पहिलही नियर गम्हीर आ झकझोरे वाला। अंक के कवि क फोटो आ ओकर कथ्य देबे चाहत रहे। 'बदलाव' कहानी फार्मूला टाइप लागल कवर पेज क कविता लोक भाव, लोक लय से पुरल असरदार रहे। कृष्णानंद क कहानी लमहर भइलो का बाद बढ़िया आ अपील करे वाली, बा। अतना साज सज्जा क जरूरत ना रहे 'पाती' अपना सामग्री का वजह से जानल जाले।

● उदयनारायण, सनसिटी, पोर्टरोड, भोपाल